इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली

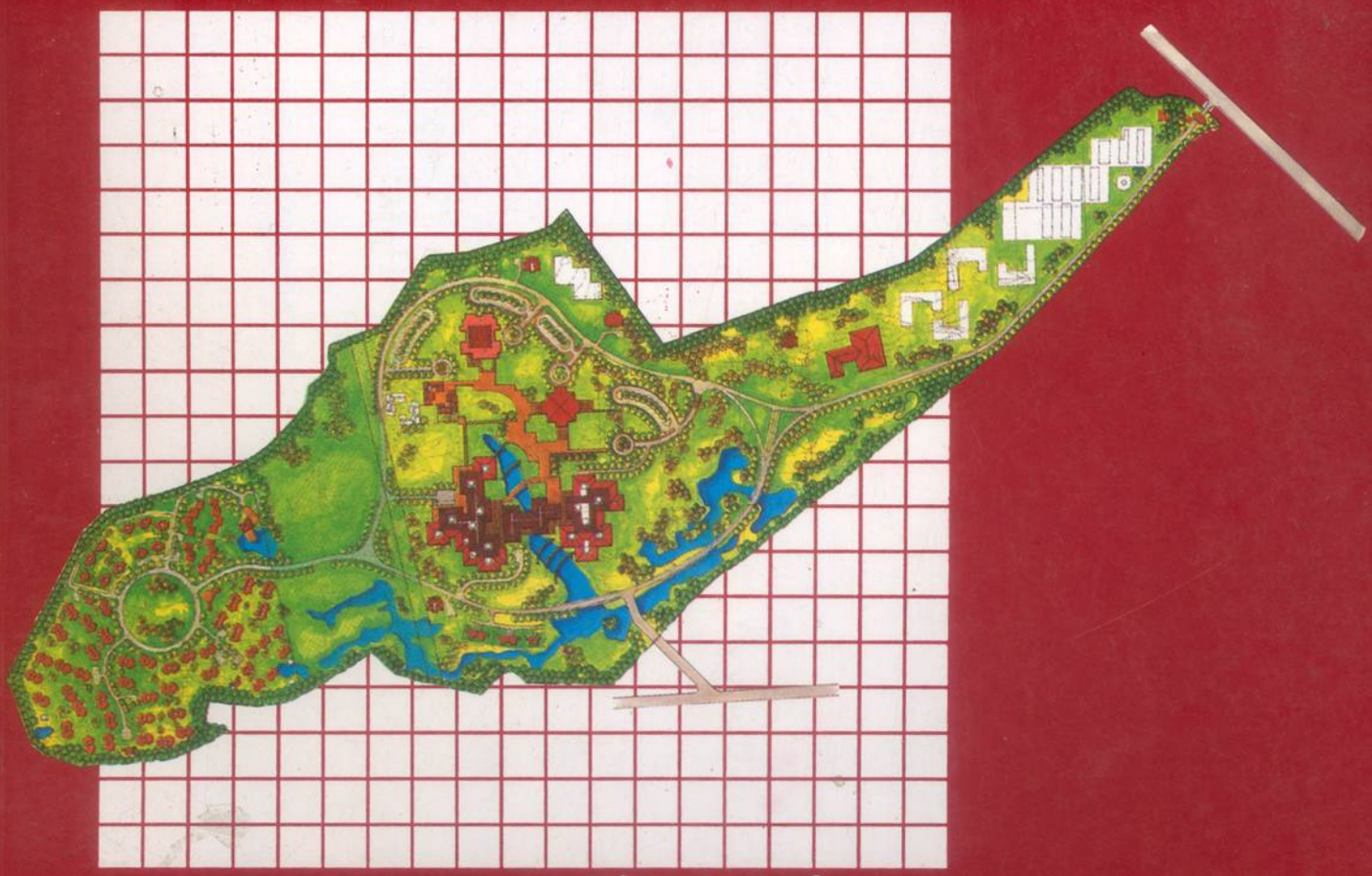

वार्षिक रिपोर्ट 1992–93

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

— *इन्दिरा गांधी*

तृतीय दीक्षांत समारोह (25 अप्रैल 1992) के अवसर पर माननीय श्री अर्जुन सिंह, मानव संसाधन विकास मंत्री

वार्षिक रिपोर्ट

1992–93

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

वार्षिक रिपोर्ट
1992–93

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम 1985 (संख्या 50, 1985) के अनुच्छेद 28 के अन्तर्गत

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	3
2	सिंहावलोकन	3
	2.1 शैक्षिक कार्यक्रम	3
	2.2 शिक्षण पद्धति	5
	2.3 इं.गां.रा.मु.वि. के कार्यक्रमों का प्रसारण	7
	2.4 कार्यक्रमों की संरचना	7
	2.5 पद्धतियों का विकास	7
3	संगठनात्मक संरचना	7
4	विश्वविद्यालय के प्राधिकरण	9
5	आधारिक संरचना तथा परिसर विकास	9
6	अध्ययन विद्यापीठों के कार्यकलाप	14
	6.1 सतत् शिक्षा विद्यापीठ	14
	6.2 कंप्यूटर और सूचना विज्ञान विद्यापीठ	15
	6.3 इंजीनियरी तथा प्रौद्योगिकी विद्यापीठ	17
	6.4 शिक्षा विद्यापीठ	19
	6.5 स्वास्थ्य विज्ञान विद्यापीठ	20
	6.6 मानविकी विद्यापीठ	21
	6.7 प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ	22
	6.8 विज्ञान विद्यापीठ	22
	6.9 सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ	24
7	शैक्षिक सहायता सेवाएँ	27
	7.1 दूर शिक्षा प्रभाग	27
	7.2 संचार प्रभाग	30
	7.3 पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग	34
8	छात्र सहायता सेवाएँ	38
	8.1 क्षेत्रीय सेवा प्रभाग	38
	8.2 प्रवेश प्रभाग	42
	8.3 मूल्यांकन प्रभाग	44
	8.4 कंप्यूटर प्रभाग	47
	8.5 मुद्रण एवं प्रकाशन प्रभाग	50
	8.6 सामग्री वितरण प्रभाग	53
9	दूर शिक्षा परिषद् की स्थापना	54
10	स्टाफ प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान की स्थापना	55
11	" इंडियन जर्नल ऑफ ओपन लर्निंग " का प्रकाशन	55

12 अन्य संस्थाओं से समझौता 56
13 भारत और विदेश में मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा इं.गां.रा.मु. विश्वविद्यालय की पाठ्य सामग्री का उपयोग 56
14 अंतर्राष्ट्रीय सहयोग 58
14.1 ओ.डी.ए. से सहायता 58
14.2 जे.आई.सी.ए. से समझौता 59
14.3 सी.ओ.एल.से सहायता 61
15 कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग का इं.गां.रा.मु.वि. को उत्कृष्टता का केंद्र घोषित करने का प्रस्ताव 61
16 संसाधन 62

परिशिष्ट

क विश्वविद्यालय के प्राधिकारी 63
क–1 प्रबंध बोर्ड के सदस्य 63
क–2 योजना बोर्ड के सदस्य 63
क–3 शैक्षिक परिषद् के सदस्य 64
क–4 दूर शिक्षा परिषद् के सदस्य 65
क–5 वित्त समिति के सदस्य 65
ख इं.गां.रा.मु.वि. के अध्ययन केंद्र 66
ग इं.गां.रा.मु.वि. में विदेशों से आए शिक्षाविदों की सूची 73
घ छात्रों का कार्यक्रमवार विभाजन 74
घ–1 (i) और (ii) लिंग के आधार पर विभाजन (पुरुष/महिला) 74–75
घ–2 (i) और (ii) अनुसूचित जाति/जनजाति/सामान्य 76–77
घ–3 (i) और (ii) शहरी/ग्रामीण 78–79
घ–4 (i) और (ii) रोज़गार प्राप्त/बेरोज़गार 80–81

चित्रों की सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
1	चलाए जा रहे कार्यक्रम	4
2	विद्यार्थियों का वर्षवार नामांकन	5
3	शिक्षण पद्धति	6
4	इं.गां.रा.मु.वि. की संगठनात्मक संरचना	8
5	संकाय के पदों की स्थिति (31.03.1993 तक)	12
6	अन्य शैक्षिक स्टाफ के पदों की स्थिति (31.03.1993 तक)	12
7	कंप्यूटर शिक्षा कार्यक्रम की संरचना	16
8	तैयार किए गए दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम (वर्षवार)	32
9	पुस्तकालयों में पुस्तकों की वृद्धि (वर्षवार)	34
10	पुस्तकालयों में पुस्तकों की कुल संख्या (वर्षवार)	35
11	अध्ययन केंद्रों का विकास (वर्षवार)	39
12	शुल्क से वार्षिक प्राप्ति (1986-87 से 1992-93 तक)	43
13	छात्रों का विभाजन : आयु वर्गवार (प्रवेश 1992-93)	43
14	छात्रों का विभाजन : पुरुष-महिला, अनु.जाति-जन. सामान्य, ग्रामीण-शहरी, रोज़गार, प्राप्त-बेरोज़गार (प्रवेश 1992-93)	43
15	प्रवेश परीक्षा : पंजीकृत छात्र x परीक्षा देने वाले छात्र	44
16	सत्रांत परीक्षा : पंजीकृत छात्र x परीक्षा देने वाले छात्र	44
17	जांचे गए सत्रीय कार्य (वर्षवार)	45
18	नए खंडों का प्रकाशन (वर्षवार)	51
19	खंडों का पुनर्मुद्रण (वर्षवार)	51
20	कुल प्रकाशन (31.3.1993 तक)	52
21	प्रकाशनों का भाषावार विवरण (31.3.1993 तक)	52

तालिकाओं की सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
1	शैक्षिक स्टाफ के पदों की स्थिति (31.3.1993 तक)	12
2	समग्र स्टाफ की स्थिति	13
3	ए..डी.सी.एम. के पाठ्यक्रमों में पंजीकरण की वर्षवार योजना	17
4	ए..डी.डब्लयू.आर.ई. के पाठ्यक्रमों में पंजीकरण की वर्षवार योजना	18
5	शैक्षिक स्टाफ के लिए स्टाफ विकास कार्यक्रम (दूर शिक्षा प्रभाग)	28
6	गैर–शैक्षिक स्टाफ के लिए स्टाफ विकास कार्यक्रम (दूर शिक्षा प्रभाग)	29
7	इं.गां.रा.मु.वि. के कार्यक्रमों का दूरदर्शन और आकाशवाणी से प्रसारण	31
8	स्टाफ विकास कार्यक्रम (संचार प्रभाग)	33
9	(क) केंद्रीय पुस्तकालय में पुस्तकों की वृद्धि	35
	(ख) क्षेत्रीय केंद्रों तथा अध्ययन केंद्रों के पुस्तकालय में पुस्तकों की वृद्धि	35
10	ओ.डी.ए. सहायता के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकें	37
11	क्षेत्रीय केंद्र नेटवर्क	38
12	अनुमोदित शैक्षिक परामर्शदाता (31.3.1993 तक)	40
13	स्टाफ विकास कार्यक्रम (क्षेत्रीय सेवा प्रभाग)	41
14	दाखिलों का कार्यक्रमवार विभाजन	41
15	दाखिलों का क्षेत्रीय केंद्रवार विभाजन	42
16	प्रवेश परीक्षा (अगस्त, 1992) का विवरण	45
17	सत्रांत परीक्षा (1992–93) का विवरण	46
18	सत्रांत परीक्षाओं में पास होने वाले छात्रों का कार्यक्रमवार विवरण	46
19	प्रमाण–पत्र/डिप्लोमा/डिग्री पाने के पात्र छात्रों का कार्यक्रमवार विवरण	47
20	वर्ष 1992–93 के दौरान छात्रों से प्राप्त सत्रीय कार्य और उनके संबंध में की गई कार्रवाई	48
21	कंप्यूटर प्रभाग के कार्य का विवरण	49
22	वर्ष 1992–93 के दौरान सामग्री वितरण प्रभाग में किए गए कार्य की मात्रा	53
23	इं.गां.रा.मु.वि. की पाठ्यक्रम सामग्री का विदेशों में उपयोग	57
24	ओ.डी.ए. के अंतर्गत इं.गां.रा.मु.वि. में विदेशों के परामर्शदाताओं के दौरे	59
25	ओ.डी.ए. के अंतर्गत दौरे और प्रशिक्षण	60

वार्षिक रिपोर्ट

1992–93

वार्षिक रिपोर्ट
1992–93

1. प्रस्तावना

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इं.गां.रा.मु.वि.) की स्थापना सितंबर, 1985 में संसद के एक अधिनियम के द्वारा हुई थी । इसकी स्थापना का उद्देश्य देश में मुक्त विश्वविद्यालय और दूर शिक्षा पद्धति का संवर्धन करना, इस पद्धति में समन्वय स्थापित करना, एवं इसके मानदंडों को निर्धारित करना था । विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य विभिन्न माध्यमों से ज्ञान का प्रचार–प्रसार करके अधिक से अधिक लोगों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना, देश की जनता के बहुत बड़े भाग को, विशेष रूप से, ऐसे वर्गों तक उच्च शिक्षा को पहुँचाना है, जिन्हें शिक्षा की सहज सुविधा उपलब्ध नहीं है । ऐसे वर्गों में महिलाएँ तथा देश के पिछड़े क्षेत्रों या दूरदराज के क्षेत्रों आदि में रहने वाले लोग हैं जिनके लिए सतत शिक्षा के कार्यक्रमों को आयोजित करने और उनके लिए उच्च शिक्षा के विशेष कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है ।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम में इसके परिचालन के लिए आधारभूत संरचना की कल्पना की गई है । इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को ज्ञान, प्रौद्योगिकी और व्यवसाय से संबंधित विभिन्न शाखाओं में शिक्षा की व्यवस्था करनी है । साथ ही, इस विश्वविद्यालय को रोज़गार और आर्थिक विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप डिग्री, डिप्लोमा और प्रमाण–पत्र कार्यक्रमों को सुदृढ़ करने तथा उनमें विविधता लानी है । इसके अलावा इस विश्वविद्यालय को, विश्वविद्यालय स्तर की ऐसी नई शिक्षा पद्धति का विकास करना है जो प्रवेश की शर्तों, आयु, अध्ययन की गति, विषयों के संयोजन आदि की दृष्टि से लचीली और बाह्य औपचारिकताओं से मुक्त हो ।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय देश के अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों और दूर शिक्षा संस्थाओं की शीर्षस्थ संस्था भी है । अपने इस दायित्व का निर्वाह करने के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थाओं से परामर्श करके दूर शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहित तथा समन्वित करने एवं शिक्षा और प्रशिक्षण के उच्च मानदंडों को बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने हैं ।

2. सिंहावलोकन

2.1 शैक्षिक कार्यक्रम

वर्ष 1992–93 के दौरान विश्वविद्यालय ने चार नए कार्यक्रम आरंभ किए । ये कार्यक्रम थे — दूर शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि, हिंदी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा, संचालन प्रबंध में डिप्लोमा, और मार्गदर्शन में प्रमाण–पत्र । कुल मिलाकर, 1992–93 के दौरान विश्वविद्यालय निम्नलिखित 43 कार्यक्रम चला रहा है (चित्र 1) :

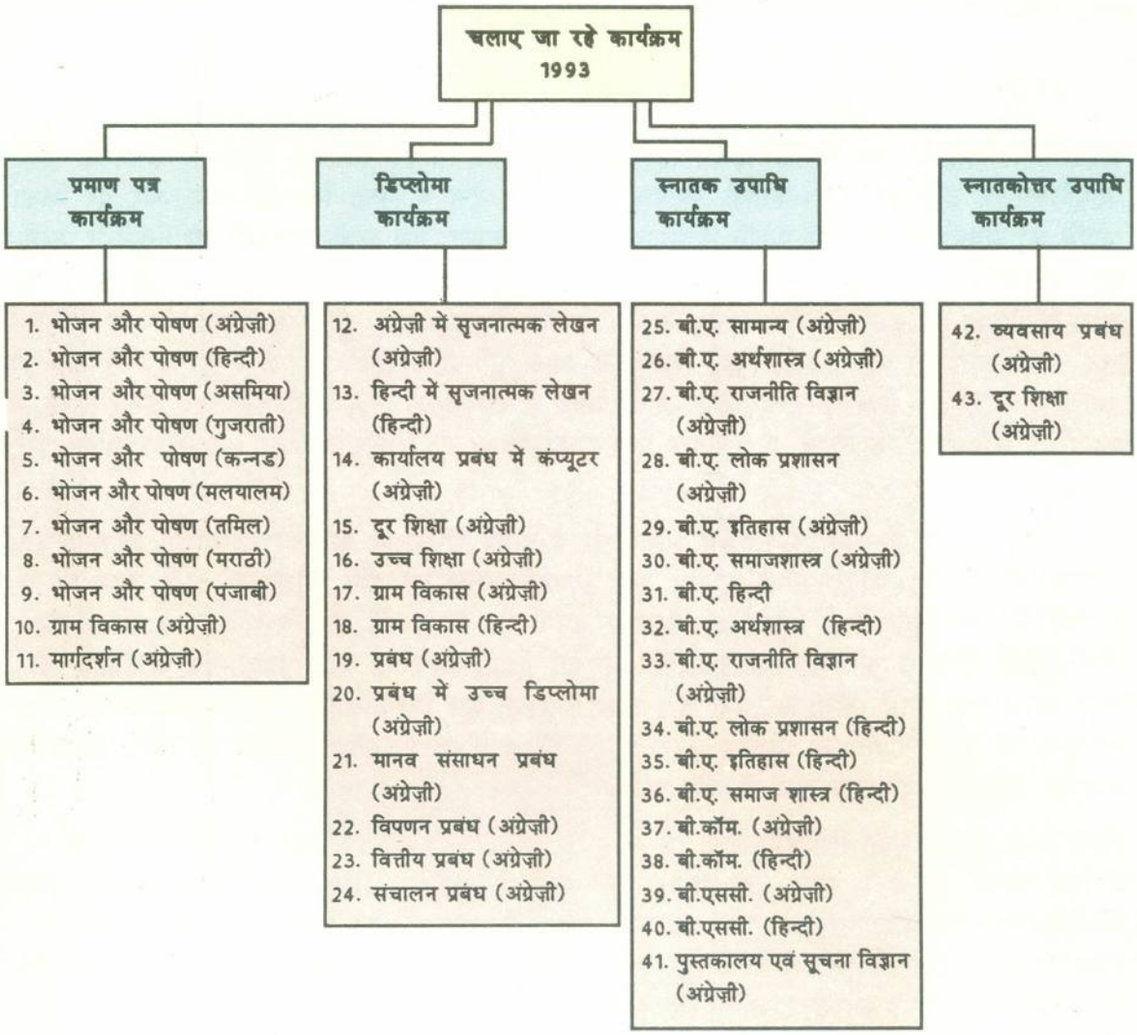

चित्र 1 : चलाए जा रहे कार्यक्रम

निर्माणाधीन नए कार्यक्रम

वर्ष 1994 के दौरान निम्नलिखित नए कार्यक्रमों को शुरू करने की योजना है :

प्रमाण–पत्र

i) पर्यटन में प्रमाण–पत्र

डिप्लोमा

ii) पत्रकारिता और जन–संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

iii) निर्माण प्रबंध में उच्च डिप्लोमा

iv) जन संसाधन इंजीनियरिंग में उच्च डिप्लोमा

v) भोजन और पोषण में डिप्लोमा

vi) पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा में डिप्लोमा

vii) कंप्यूटर अनुप्रयोग में डिप्लोमा

स्नातक उपाधि

viii) नर्सिंग में स्नातक उपाधि

स्नातकोत्तर उपाधि

xi) पुस्तकालय विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि

विद्यार्थियों का नामांकन

विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है । वर्ष 1992–93 में विश्वविद्यालय में कुल 75,666 नए विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया । गत छह वर्षों में प्रविष्ट छात्रों की वर्षवार बढ़ती हुई संख्या नीचे दर्शाई गई है (चित्र 2) :

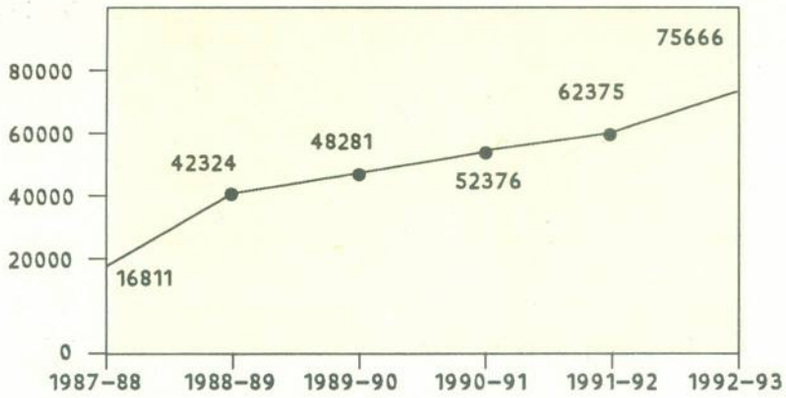

चित्र 2 : विद्यार्थियों का वर्षवार नामांकन

2.2 शिक्षण पद्धति

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने शिक्षण के लिए बहु–माध्यम पद्धति का विकास किया है । इस पद्धति के मुख्य घटक हैं—स्व–शिक्षण से संबंधित मुद्रित सामग्री, दृश्य और श्रव्य (वीडियो और ऑडियो) कार्यक्रम तथा परामर्श सत्र । स्व–शिक्षण से संबंधित मुद्रित सामग्री में पाठ्यक्रम सामग्री, सत्रीय कार्य, कार्यक्रम दर्शिका तथा अनुपूरक पाठ्य–सामग्री शामिल है । कुछ पाठ्यक्रमों की अपनी आवश्यकता के अनुरूप परियोजना कार्य भी होता है । इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के मुख्य घटक दृश्य और श्रव्य कैसेटें हैं । ये कैसेटें सभी अध्ययन केंद्रों में उपलब्ध हैं । सभी अध्ययन केंद्रों में इनको देखने और सुनने की सुविधा उपलब्ध है ताकि विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार इनका लाभ उठा सकें ।

देश–भर में अध्ययन केंद्रों का जाल फैला हुआ है । इनमें विद्यार्थियों के लिए काउंसलिंग, मार्गदर्शन, प्रत्यक्ष विचार–विमर्श और परामर्श आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं । यहाँ विद्यार्थी दृश्य/श्रव्य कार्यक्रमों को देख/सुन सकते हैं तथा पठन सामग्री का लाभ उठा सकते हैं । इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की शिक्षण पद्धति में व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों में भाग लेना अनिवार्य नहीं है । लेकिन जहाँ प्रयोगशाला कार्य/प्रयोगात्मक अनुभव शिक्षा ढाँचे के अनिवार्य घटक हैं, वहाँ विद्यार्थियों के लिए उन्हें पूरा करना अनिवार्य है ।

किसी भी पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के लिए निर्धारित संख्या में सत्रीय कार्य पूरे करने आवश्यक होते हैं । इन सत्रीय कार्यों की जाँच अध्ययन केन्द्र में परामर्शदाताओं के द्वारा अथवा मुख्यालय में कंप्यूटर द्वारा की जाती है । ये दोनों प्रकार के सत्रीय कार्य विद्यार्थी की प्रगति का लगातार मूल्यांकन करने की पद्धति के अंग हैं । इसके अलावा, सत्रांत परीक्षा भी ली जाती है । ये परीक्षाएँ हर वर्ष दो बार आयोजित की जाती हैं ।

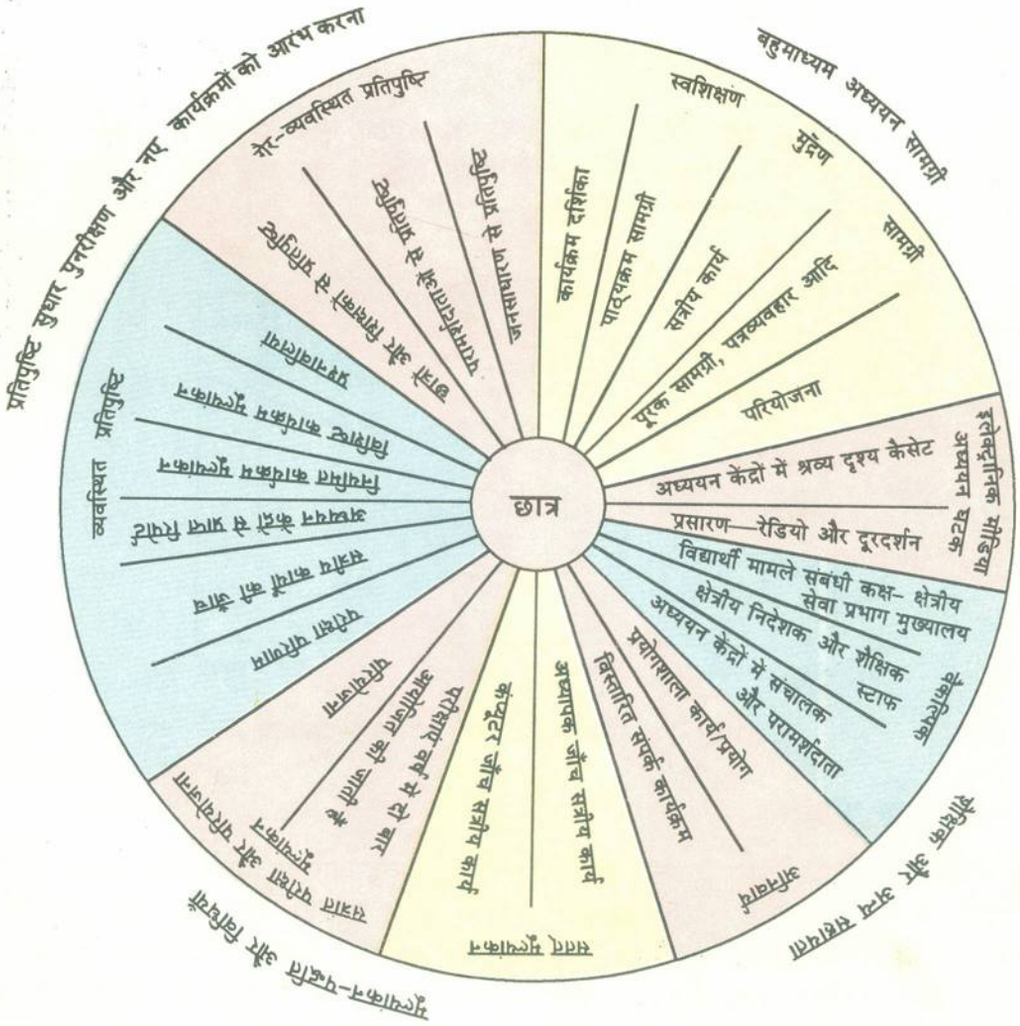

चित्र 3 : शिक्षण पद्धति

2.3 इं.गां.रा.मु.वि. के कार्यक्रमों का प्रसारण

दूरदर्शन ने 20 मई, 1991 से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों का अपने राष्ट्रीय नेटवर्क से सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को प्रातः 6.25 बजे से प्रसारण आरंभ किया है । इन प्रसारणों के लिए कैप्सूल तैयार किए जा रहे हैं और विश्वविद्यालय के संचार प्रभाग द्वारा दूरदर्शन को सप्लाई किए जा रहे हैं । जनवरी, 1992 से आकाशवाणी ने भी बम्बई और हैदराबाद केंद्रों से चुने हुए श्रव्य कार्यक्रमों का प्रसारण आरंभ कर दिया है ।

2.4 कार्यक्रमों की संरचना

विश्वविद्यालय द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रम मॉड्यूलर पद्धति पर आधारित हैं । प्रमाण-पत्र, डिप्लोमा और उपाधियां प्रदान करने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रमों के समुचित संयोजन की सुविधा दी गई है । उदाहरण के लिए अलग-अलग डिप्लोमा अथवा व्यवसाय प्रबंध में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.बी.ए.) लेने के लिए प्रबंध में पाठ्यक्रमों को विभिन्न प्रकार से और समुचित रूप से संयोजित किया जा सकता है । इस प्रकार शिक्षा, इंजीनियरी और प्रौद्योगिकी आदि कार्यक्रमों में नामांकित होने वाले विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमों के ऐसे संयोजनों या वर्गों से डिप्लोमा और उपाधियाँ मिल सकेंगी ।

विश्वविद्यालय ने सिद्धांततः यह निर्णय लिया है कि विद्यार्थी पूरे कार्यक्रम (जिसमें कई पाठ्यक्रम होते हैं) के बजाय अलग-अलग विशिष्ट पाठ्यक्रमों में पंजीकरण कराएँ । इस प्रकार, विद्यार्थी अपने ज्ञान के अनुरूप केवल उन्हीं कार्यक्रमों में पाठ्यक्रमवार पंजीकरण कराएगा जो उसकी आवश्यकता के अनुरूप हैं । इससे विश्वविद्यालय सेवारत कर्मचारियों की सतत शिक्षा की बढ़ती हुई माँग को पूरा कर सकेगा ।

2.5 पद्धतियों का विकास

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की शिक्षण पद्धति में निम्नलिखित उप-पद्धतियों का प्रमुख योगदान रहा है :

- पाठ्यक्रम की रूपरेखा और विकास
- सामग्री निर्माण और सामग्री वितरण
- छात्र सहायता सेवाएँ

पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाना और उसका विकास करना विश्वविद्यालय के संकाय का मुख्य दायित्व है । इस कार्य में अधिक संख्या में बाहरी विशेषज्ञ विश्वविद्यालय के संकाय की सहायता करते है । गत पाँच वर्षों में विभिन्न कार्यक्रमों के पाठ्यक्रमों को तैयार करने में लगभग 1200 पाठ लेखकों और 120 पाठ संपादकों का सहयोग प्राप्त किया गया । विश्वविद्यालय के संकाय द्वारा विषय-वस्तु और संरचना संपादन तथा, जहाँ आवश्यक हो, बाहरी विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई सामग्री का संशोधन किया जाता है । कई विषयों में, संकाय के सदस्य स्वयं पाठ्यक्रमों को तैयार करने में सहयोग देते हैं ।

3. संगठनात्मक संरचना

आरंभिक अवस्था के दौरान विश्वविद्यालय की संगठनात्मक संरचना — पाठ्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने, उन्हें बनाने तथा उनका विकास, निर्माण एवं वितरण करने, विद्यार्थियों के प्रवेश, शैक्षिक परामर्श, मूल्यांकन, विद्यार्थियों से संबंधित रिकॉर्ड प्रबंध और अन्य सहायक सेवाएँ उपलब्ध कराने जैसे मुख्य कार्यों को ध्यान में रखकर की गई थी । विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित अध्ययन विद्यापीठों की जिम्मेदारी मुख्यतः पाठ्यक्रमों की रूपरेखा बनाने, उन्हें विकसित तथा तैयार करने की थी । मुद्रित सामग्री को तैयार

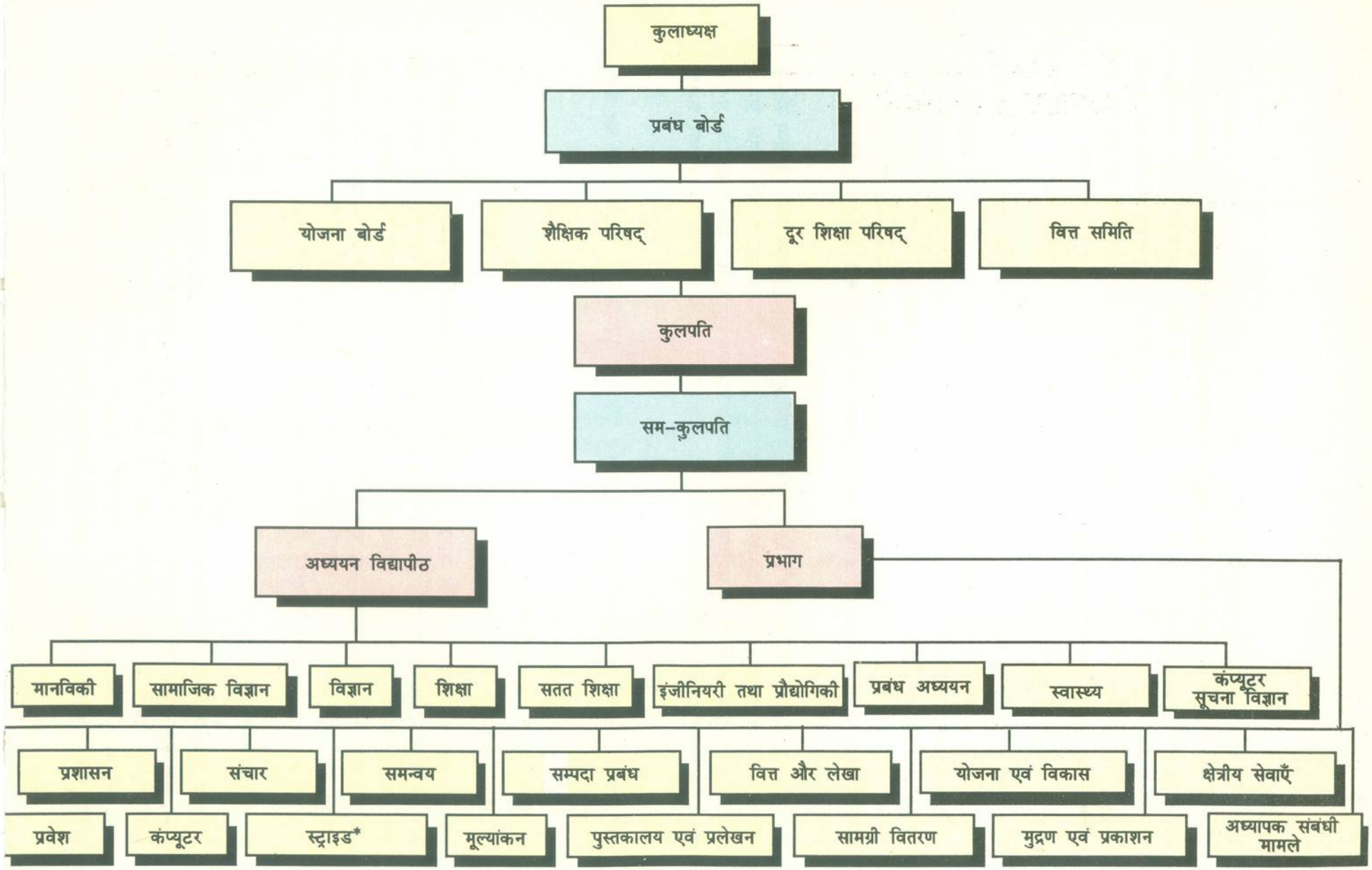

चित्र 4 :इं.गां.रा.मु.वि. की संगठनात्मक संरचना

दूर शिक्षा स्टाफ प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान

करने, उनका भंडारण एवं विद्यार्थियों को सामग्री प्रेषित करने की जिम्मेदारी मुद्रण एवं प्रकाशन प्रभाग तथा वितरण प्रभाग की है । विभिन्न विद्यापीठों के परामर्श से संचार प्रभाग विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए दृश्य/श्रव्य कार्यक्रमों को तैयार करता है । यह प्रभाग दृश्य/श्रव्य कार्यक्रमों के निर्माण तथा उनकी प्रतियाँ तैयार करने के लिए आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है । क्षेत्रीय सेवा प्रभाग द्वारा काउंसलिंग, मार्गदर्शन, सत्रीय कार्यों पर प्रतिपुष्टि आदि के रूप में विद्यार्थियों को सहायता सेवाएँ प्रदान की जाती हैं । कंप्यूटर प्रभाग मुख्य रूप से विद्यार्थियों का रिकॉर्ड रखने के लिए उत्तरदायी है । विद्यार्थियों को प्रवेश और उनके कार्य-निष्पादन के मूल्यांकन के लिए अलग-अलग प्रभाग हैं । दूर शिक्षा प्रभाग का संबंध विश्वविद्यालय की शिक्षण पद्धति और उसके मूल्यांकन के विभिन्न कार्य प्रणाली संबंधी पहलुओं से है ।

4. विश्वविद्यालय के प्राधिकरण

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम में की गई व्यवस्था के अनुसार प्रमुख निर्णयकारी निकाय हैं : प्रबंध बोर्ड, शैक्षिक परिषद्, योजना बोर्ड, अध्ययन विद्यापीठ और वित्त समिति । दूर शिक्षा परिषद्, जिसने अप्रैल, 1992 से कार्य करना आरंभ किया, को भी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का सांविधिक प्राधिकरण घोषित किया गया है ।

प्रबंध बोर्ड विश्वविद्यालय का प्रमुख कार्यकारी निकाय है तथा **शैक्षिक परिषद्** उसकी मुख्य शैक्षिक निकाय है । **अध्ययन विद्यापीठ** शैक्षिक संगठन की मूलभूत इकाइयाँ हैं । प्रत्येक विद्यापीठ का अध्ययन बोर्ड है, जिस पर पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने, उसकी विषय-वस्तु और संरचना निर्धारित करने, पाठ्य-सामग्री विकसित करने आदि का दायित्व है । अध्ययन विद्यापीठों का कार्य **शैक्षिक परिषद्** के पर्यवेक्षण में होता है और अध्ययन विद्यापीठों पर उसका पूर्ण नियंत्रण रहता है । परिषद् विश्वविद्यालय की शैक्षिक नीतियाँ भी निर्धारित करती है । **योजना बोर्ड** विश्वविद्यालय का मुख्य योजना निकाय है । यह शैक्षिक कार्यक्रमों और कार्यकलापों की रूपरेखा बनाने तथा उन्हें तैयार करने के लिए उत्तरदायी है । इसे किसी भी मामले में प्रबंध बोर्ड और शैक्षिक परिषद् को परामर्श देने का भी अधिकार है । विश्वविद्यालय की प्रगति पर नज़र रखना भी योजना बोर्ड की ही जिम्मेदारी है । **वित्त समिति** के कार्यों में विश्वविद्यालय के वार्षिक लेखे और वित्तीय प्राक्कलन तैयार करना तथा कुल आवर्ती और अनावर्ती व्यय के लिए सीमा निर्धारित करना सम्मिलित है । **दूर शिक्षा परिषद्** वह प्राधिकरण है जो दूर शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहित करने तथा समन्वय स्थापित करने एवं इसके मानदंडों को बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है । इसका यह भी दायित्व है कि वह राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों के लिए विकास निधियन की सिफारिश करे । यह प्रबंध बोर्ड द्वारा निर्धारित समग्र नीति संबंधी मार्गदर्शी सिद्धांतों के अंतर्गत कार्य कर रही है ।

वर्ष 1992-93 के दौरान विश्वविद्यालय के प्रबंध बोर्ड की पांच बैठकें हुईं । प्रबंध बोर्ड की चार स्थाई समितियों की भी कई बैठकें हुईं, स्थापना समिति की पांच बैठकें हुईं, कार्य समिति की दो बैठकें और विद्यार्थी सहायता सेवा समिति और क्रय समिति की एक-एक बैठक हुई ।

वर्ष के दौरान, शैक्षिक परिषद और दूर शिक्षा परिषद की तीन-तीन बैठकें हुईं, जबकि योजना बोर्ड की की दो बैठकें हुईं ।

5. आधारिक संरचना और परिसर विकास

विश्वविद्यालय ने वर्ष 1990-91 के दौरान अपने स्थायी भवनों के निर्माण के लिए वास्तुविद के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर करके एक बड़ा कदम उठाया था । विश्वविद्यालय ने केंद्रीय लोक निर्माण विभाग

को निर्माण का ठेका देने का निर्णय भी लिया था ।

दिल्ली में भवन निर्माण की किसी भी योजना पर कार्य आरंभ करने से पहले जिन-जिन औपचारिकताओं को पूरा करना पड़ता है, उन सभी औपचारिकताओं को पूरा करते हुए विश्वविद्यालय परिसर के विकास का कार्यक्रम शुरू किया गया है । प्रबंध बोर्ड ने भवन योजना के प्रथम चरण को मंजूरी दे दी है । वैसे, इस संबंध में विस्तृत विवरण पिछली रिपोर्ट में पहले ही दिया जा चुका है । रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, जापान सरकार ने भवन सहित शैक्षणिक माध्यम उपस्कर सुविधाओं को स्थापित करने के लिए सहायता सेवाएँ देना सिद्धांत रूप में स्वीकार कर लिया है । फलस्वरूप, निर्माण कार्यक्रम के प्रथम चरण में कुछ परिवर्तन किए गए हैं । अब प्रथम चरण में निम्नलिखित कार्य होगा :

i) कर्मचारी आवास

ii) तकनीकी भवन

- पुस्तकालय
- कंप्यूटर प्रभाग
- विद्यापीठों के लिए भवन

iii) सामान्य सुविधाएँ

- केफ्टेरिया
- गेस्ट हाउस-कम-होस्टल
- शॉपिंग कॉम्प्लेक्स
- बैंक, डाकघर और स्वास्थ्य केंद्र

iv) सेवाएँ

- सड़कें
- जलापूर्ति
- जल निकास
- मल निकासी (सीवरेज)
- बिजली

v) बागवानी

मुख्य सड़क बनाने का कार्य पूरा हो चुका है और अब पुल बनाने का कार्य शुरू किया गया है । आंतरिक सड़कें बनाने के लिए निविदाएँ माँगी गई हैं । जहाँ तक जलापूर्ति का संबंध है, 8 कुएँ खोदे गए हैं और उनमें से 4 को ट्यूबवैलों में परिवर्तित किया जा रहा है । पानी का भंडारण करने वाली टंकियाँ, विद्युत सब-स्टेशन भवन और बागवानी का काम चल रहा है । केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, आवासीय भवनों को बनाने के लिए निविदाएँ माँग चुका है । आशा है कि जून/जुलाई, 1993 से कार्य आरंभ हो जाएगा । इस कार्य को 18 महीनों के भीतर पूरा करने की योजना है । परियोजना के प्रथम चरण पर कुल व्यय 23.17 करोड़ रूपए आने का अनुमान है और आशा है कि यह चरण जुलाई, 1995 या वर्ष 1995 के अंत तक पूरा हो जाएगा ।

ENVIRONMENTAL DEVELOPMENT PLAN

MASTER PLAN CHARACTERISTICS

1. ZONES
- ACADEMIC
- HOUSING
- EXISTING STRUCTURES & UNDEVELOPED AREA. (FUTURE MATERIAL PRODUCTION)
- SERVICE CORRIDOR
- LEFT OVER SPACES

2. MASSING
- LOW HEIGHT STRUCTURES WITH COURTYARD & SLOPING ROOF
- UNIFORMITY BETWEEN BUILDING MASSING & SITE PROFILE.

3. BUILDING PROFILE
- COMPACT ACADEMIC ZONE FOR OPEN UNIVERSITY EFFICIENCY
- CLUSTERS ORGANISED ALONG OPEN SPACE SYSTEM IN HOUSING ZONE

4. LANDFORM
- UNDULATING WITH DEFINED VALLEY LINES
- DRAINAGE THROUGH DITCHES

PARAMETERS FOR LANDSCAPE DEVELOPMENT

1 ACTIVITIES
- ACTIVE RECREATION
  PLAYFIELDS
  LARGER PLAY COURTS
  SMALLER PLAY COURTS
  TOTLOTS
- PASSIVE RECREATION
  PEDESTRIAN TRAIL
  AFFORESTATION
  PASSIVE PUBLIC SPACE
- SHOPPING
- PLAZA

INTEGRATION OF PITS INTO ACTIVE SPACES

MAINTENANCE OF NEIGHBOURHOOD OPEN SPACE AND DENSITY RELATIONSHIP
- PLATEAUS: POTENTIAL ACTIVE RECREATION PATCHES

2 CIRCULATION
- PEDESTRIAN

ORGANISED, COMFORTABLE PEDESTRIAN PATHS AND CYCLE TRACKS

ACCESS TO COMMUNITY OPEN SPACE FROM CLUSTER AND NEIGHBOURHOOD OPEN SPACES THROUGH UNDER PASSES
- VEHICULAR (AS PER MASTER PLAN)

3 CLIMATE
- PROVIDE ADEQUATE SUMMER SHADE
- DO NOT BLOCK WINTER SUN
- INCREASE MOISTURE LEVEL IN AIR
- ALLOW FREE WIND MOVEMENT
- MINIMISE LARGE PAVED AREAS TO REDUCE HEAT EMISSION
- CHECK WIND BORNE FFLY-ASH FROM CREMATION GROUND AT NORTH-WEST

4 SOILS
SANDY LOAM SOIL WITH ROCK OUTCROP
CONSERVE TOPSOIL FROM EROSION

5 HYDROLOGY
- CHANNELISE STORM WATER TOWARDS RETENTION PONDS
- CONSERVE MOISTURE IN SOIL
- REDUCE EVAPORATION OF WATER IN RETENTION PONDS & RESERVOIRS
- EXPLORE RAIN WATER RETENTION IN PITS

6 PLANTING
- FAST GROWING, SHORT LIVED, PROFUSE FLOWERING PLANTATION
- SLOW GROWING, LONG LIVED MODERATE FLOWERING PLANTATION
- DECIDUOUS PLANTATIONS ALONG PUBLIC AREAS & NEARBY BUILDINGS
- EXPLORE PLANTATIONS IN PITS
- TREE PLANTATION PHASING
  PRIORITY-1 - PERIPHERAL
  PRIORITY-2 - ROAD SIDE & CLUSTERS
  PRIORITY-3 - AROUND BUILDINGS

7 IRRIGATION
- WATER CONSERVATION & CENTRALISED OPERATION CONTROL BY DRIP IRRIGATION FOR TREES

स्टाफ

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय ने एक प्रमुख निर्णय यह लिया कि अध्ययन विद्यापीठों से बाहर के कुछ पदों को " अन्य शैक्षिक पदों" के रूप में विकसित किया जाए। मुख्यालय में क्षेत्रीय सेवा प्रभाग तथा विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्रों में लगभग 90 पदों को अब इस श्रेणी के अंतर्गत पुनर्वर्गीकृत किया गया है।

वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय के प्रबंध बोर्ड ने अनिवार्य (कोर) संकाय के पदों की समीक्षा की और संकाय के पदों में 27 प्रोफेसर, 42 रीडरों तथा 97 लेक्चरर के पद निर्धारित किए।

31.3.1993 को स्वीकृत शैक्षिक पदों और कार्यरत स्टाफ की स्थिति निम्न प्रकार से है :

तालिका 1 : शैक्षिक स्टाफ के पदों की स्थिति (31.3.1993 तक)

पदनाम	स्वीकृत पद	भरे हुए पद
1. प्रोफेसर	27	23
2. रीडर	42 *	29
3. लेक्चरर	97	83 **
4. अन्य शैक्षिक पद :		
i) क्षेत्रीय सेवा प्रभाग	10	5
ii) क्षेत्रीय निदेशक	16	14
iii) सहायक क्षेत्रीय निदेशक	64	**45
कुल	256	199

* रीडर के 11 नए पद नवंबर 1992 में मंजूर हुए हैं।

** कैरियर एडवांसमेंट स्कीम के अंतर्गत रीडर के पद पर दो लेक्चरर कार्य कर रहे हैं।

*** 20 लेक्चररों सहित।

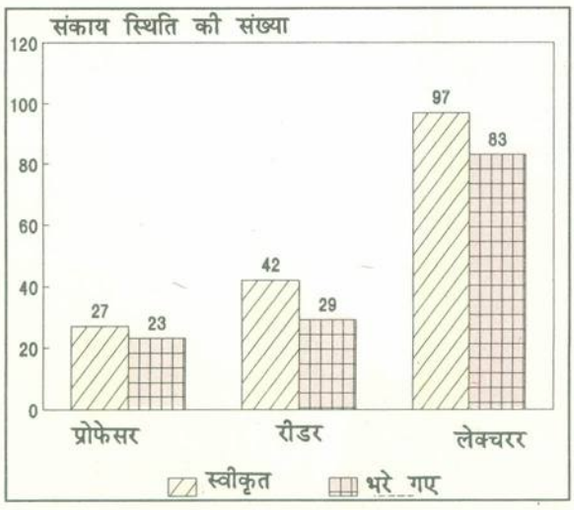

चित्र 5 संकाय के पदों की स्थिति 31.3.93 तक

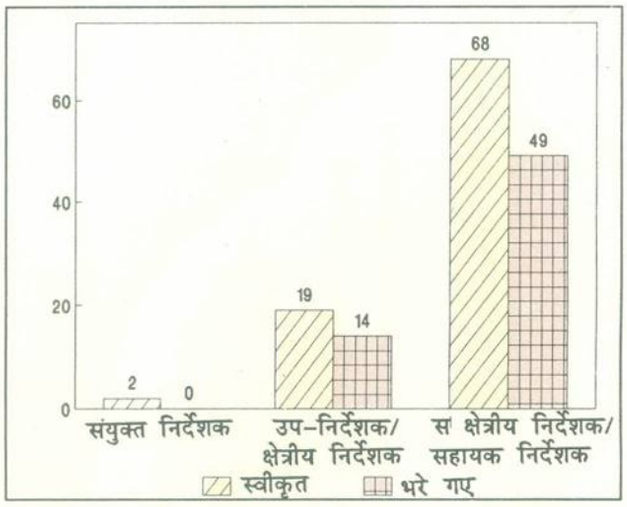

चित्र 6 अन्य शैक्षिक स्टाफ के पदों की स्थिति (31.3.93 तक)

मार्च, 1993 में समग्र स्टाफ की स्थिति निम्नलिखित थी :

तालिका 2 : समग्र स्टाफ की स्थिति

पद श्रेणी	कार्यरत स्टाफ की स्थिति	
	31.3.1992	31.3.1993
क) विश्वविद्यालय के अधिकारी	19	24*
ख) अध्यापक :		
प्रोफेसर	21	23
रीडर	28	29
लेक्चरर		
i) अध्ययन विद्यापीठ में	71	83
ii) क्षेत्रीय केंद्रों में	22	20
ऐकेडेमिक एसोशिएट	16	—
ग) अन्य शैक्षिक स्टाफ :		
क्षेत्रीय निदेशक	13	14
सहायक क्षेत्रीय निदेशक (लेक्चरारों सहित)	26	49
घ) तकनीकी/व्यवसायिक स्टाफः		
समूह क	36	32
समूह ख		21
समूह ग		110
ङ) प्रशासनिक स्टाफ		
समूह क	24	28
समूह ख	70**	60
समूह ग	497**	427

* 10 प्रोफेसर सहित ।

** तकनीकी/व्यवसायिक स्टाफ सहित ।

अनुसूचित जाति/जनजाति, कर्मचारीयों की संख्या 31-3-93 तक निम्नलिखित है । ग्रूप ' ए ' अनुसूचित जाति-13, जानजाति-3, ग्रूप ' बी ' अनुसूचित जाति-12, जनजाति-1, ग्रूप ' सी ' अनुसूचित जाति-74, जनजाति-5

रिपोर्टाधीन वर्ष में 27 परामर्शदाता (23 पूर्णकालिक और 4 अंशकालिक) पाठ्यक्रम विकास और पाठ्यक्रम निर्माण के कार्यों से सम्बद्ध थे । इनमें से 24 परामर्शदाताओं (21 पूर्णकालिक और 3 अंशकालिक) ने अपना कार्य पूरा कर लिया तथा शेष परामर्शदाता 31.3.1993 को विश्वविद्यालय में कार्यरत थे ।

6. अध्ययन विद्यापीठों के कार्यकलाप

6.1 सतत् शिक्षा विद्यापीठ

सतत शिक्षा विद्यापीठ का लक्ष्य ऐसे पाठ्यक्रमों को विकसित करना है जिससे अध्येयता अपनी जीवन कोटि को सुधार सके, जो सामाजिक दृष्टि से प्रासंगिक हो और जो उन्हें ऐसा ज्ञान, समझ तथा दक्षता प्रदान करे जिससे वे अपनी आजीविका पैदा करने लायक हो सकें। शुरूआत में, विद्यापीठ ने दो प्रणोद क्षेत्रों को चुना। ये क्षेत्र हैं — ग्राम विकास और महिला शिक्षा। विद्यापीठ द्वारा विकसित अध्ययन कार्यक्रमों में क्रेडिट तथा क्रेडिट-इतर, दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम होते हैं।

ग्राम विकास मंत्रालय द्वारा प्रायोजित "ग्राम विकास में प्रमाण-पत्र" कार्यक्रम 1989 में खंड विकास अधिकारियों के लिए शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम का मुख्य केंद्र ग्राम विकास कार्यक्रमों की योजना निर्माण, कार्यान्वयन, देख-रेख (मानीटरिंग) और मूल्यांकन के क्षेत्र में खंड विकास अधिकारियों को प्रशिक्षण देना था। पहले चरण में, यह कार्यक्रम केवल राजस्थान राज्य तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के लिए आरंभ किया गया था। इस कार्यक्रम का विस्तार अन्य राज्यों में भी करने के लिए ग्राम विकास मंत्रालय से बातचीत शुरू की गई है।

वर्ष 1992 में विद्यापीठ ने स्नातकोत्तर उपाधि स्तर पर ग्राम विकास में एक वर्षीय डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू किया। यह कार्यक्रम 30 क्रेडिट का है और हिंदी तथा अंग्रेज़ी माध्यम से दिया जा रहा है। इस कार्यक्रम में पाँच पाठ्यक्रम हैं। ये हैं — (i) भारत में ग्राम विकास, (ii) ग्राम विकास कार्यक्रम, (iii) ग्राम विकास योजना और प्रबंध, (iv) ग्रामीण सामाजिक विकास, तथा (v) परियोजना कार्य। विद्यापीठ ग्राम विकास में छह-छह क्रेडिटों के अन्य पाठ्यक्रम विकसित कर रहा है ताकि उनसे विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम चुनने के लिए अधिक विकल्प मिल सकें। अंततः 60 क्रेडिटों के स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम को विकसित करने का विचार किया गया है। निम्नलिखित ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए विशेषज्ञ समितियाँ गठित की गई हैं :

- ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल,
- स्वैच्छिक संगठन,
- संचार तथा विस्तार, और
- ग्रामीण बैंकिंग तथा सहकारी समितियाँ

पोषण और बाल विकास के क्षेत्र में विद्यापीठ ने पाठ्यक्रम के विभिन्न स्तरों पर काम शुरू किया है। वर्ष 1988 में भोजन और पोषण में प्रमाण-पत्र कार्यक्रम शुरू किया गया था। यह केवल अभिज्ञा कार्यक्रम है जिसका लक्ष्य अध्येयताओं को भोजन की भूमिका की यह जानकारी देना है कि वे अपने व्यक्तिगत, परिवार और समुदाय के स्वस्थ रहन-सहन सुनिश्चित कर सकें। यह विश्वविद्यालय का एकमात्र कार्यक्रम है जो कई भाषाओं के माध्यम से पढ़ाया जा रहा है। पहले यह कार्यक्रम अंग्रेज़ी, हिंदी, गुजराती, तेलुगु और असमिया में दिया जाता था। शुरू में इसमें प्रवेश केवल असम, गुजरात, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में सीमित था। वर्ष 1991 से इस कार्यक्रम का विस्तार देश के सभी राज्यों में किया गया है और अंग्रेज़ी तथा हिंदी माध्यम में उपलब्ध हैं। अब यह कार्यक्रम पाँच और भाषाओं, अर्थात् तमिल, कन्नड, मलयालम, मराठी और पंजाबी भाषाओं में भी उपलब्ध है। पहले यह

21 वर्ष से अधिक आयु के किसी भी साक्षर व्यक्ति के लिए शुरू किया गया था, परंतु अब आयु सीमा घटाकर 18 वर्ष कर दी गई है । परामर्श सत्र डॉक्टरों, पोषणविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा संचालित किए जाते हैं । गृहणियों के अनुरोध पर तमिलनाडु और गुजरात में यह अध्ययन कार्यक्रम केबल नेटवर्क पर भी उपलब्ध कराया गया है । 1992–93 में इस कार्यक्रम में 5957 विद्यार्थियों ने दाखिला लिया । इनमें 81.8 प्रतिशत महिलाएँ थीं ।

1992–93 के दौरान, विद्यापीठ ने स्नातक उपाधि कार्यक्रम के लिए निम्नलिखित पाठ्यक्रमों में योगदान किया :

1. ग्राम विकास में ऐच्छिक पाठ्यक्रम (8 क्रेडिट)
2. समुदाय के लिए पोषण में व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम (8 क्रेडिट)
3. बाल देखभाल सेवाओं के गठन में व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम (8 क्रेडिट)

रिपोर्टाधीन वर्ष में स्कूल बोर्ड की दो बैठकें हुई ।

6.2 कंप्यूटर और सूचना विज्ञान विद्यापीठ

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान विद्यापीठ इस समय चल रहे "कार्यालय प्रबंध में कंप्यूटर में डिप्लोमा" (डी.सी.ओ.) कार्यक्रम के अनुरक्षण और भविष्य में शुरू किए जाने वाले नए कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने और विकसित करने में व्यस्त रहा । जनवरी, 1993 में कार्यालय प्रबंध में कंप्यूटर में डिप्लोमा कार्यक्रम में नामांकन में वृद्धि हुई और यह संख्या बढ़कर 860 हो गई, जबकि उससे पिछले वर्ष यह संख्या 620 थी । वर्ष के दौरान 152 विद्यार्थी डिप्लोमा परीक्षा में उत्तीर्ण हुए । पूर्णतः कंप्यूटर–चालित वीडियो फिल्म निर्माण का प्रयोग किया गया और वाइरस के बारे में बुनियादी धारणाएँ देते हुए "कंप्यूटर वाइरस" पर फिल्म बनाई गई ।

भावी कार्यक्रम

विद्यापीठ ने लगभग 25 पाठ्यक्रमों के सेट की रूपरेखा तैयार की है । यह रूपरेखा कंप्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, कंप्यूटर अनुप्रयोग में उच्च डिप्लोमा और अंततः कंप्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर उपाधि का भाग बनेगी ।

रूपरेखा इस प्रकार तैयार की गई है ताकि जो व्यक्ति कंप्यूटर को अपना व्यवसाय बनाना चाहते हैं, वे शुरू में डिप्लोमा के लिए पाठ्यक्रमों का चयन कर सकें और बाद में उसे पूरे " कंप्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर उपाधि" कार्यक्रम तक जारी रख सकें ।

विद्यापीठ ऐसे कार्यक्रम विकसित करना चाहता है जो पाठ्यक्रमों में अकेला ही ऐसा हो जिसे इस क्षेत्र में कार्यरत व्यक्ति अपने तकनीकी ज्ञान को अद्यतन रखने के लिए आगे जारी रख सकें । जो विद्यार्थी कंप्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर उपाधि के उच्च स्तर से तीन पाठ्यक्रमों के सेट को लेंगे, उन्हें उच्च कंप्यूटिंग में प्रमाण–पत्र दिया जाएगा । संपूर्ण रूपरेखा प्रणालीबद्ध तरीके से आरेख में दिखाई गई है :

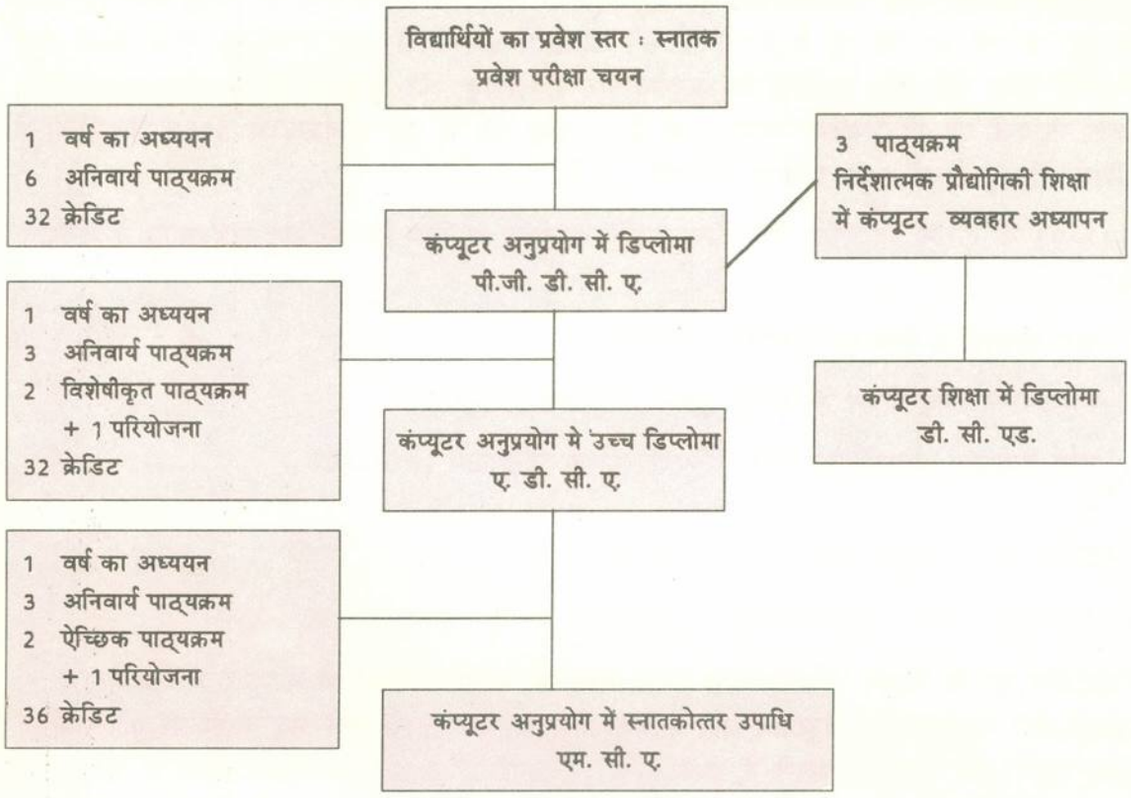

चित्र 7 : कंप्यूटर शिक्षा कार्यक्रम की संरचना

टिप्पणियाँ :

1. कंप्यूटर अनुप्रयोग में उच्च डिप्लोमा (ए.डी.सी.ए) कार्यक्रम में केवल उन्हीं विद्यार्थियों को पार्श्विक प्रवेश दिया जा सकेगा जो कंप्यूटर अनुप्रयोग में डिप्लोमा (डी.सी.ए.) कार्यक्रमों से पात्र होंगे ।
2. इलैक्ट्रॉनिक विभाग द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रमों की संरचना के अनुसार "कंप्यूटर अनुप्रयोग में डिप्लोमा " कार्यक्रम "ए" स्तर का कार्यक्रम है तथा "कंप्यूटर अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर उपाधि " (एम.सी.ए.) कार्यक्रम "बी" स्तर का ।
3. द्वितीय वर्ष अथवा तृतीय वर्ष (ए.डी.सी.ए. अथवा एम.सी.ए.) के 3 पाठ्यक्रमों के सेट से विद्यार्थी, चुने गए पाठ्यक्रमों के आधार पर समुचित नामावली सहित उच्च कंप्यूटिंग में प्रमाण-पत्र कर सकेगा ।
4. कार्यक्रम की आवश्यकताओं के अनुरूप सभी पाठ्यक्रम नहीं किए जाने की स्थिति में भी, उन पाठ्यक्रमों में से किसी भी एक पाठ्यक्रम को किया जा सकेगा । उस स्थिति में, केवल किए गए पाठ्यक्रम-विशेष को पूरा करने का प्रमाण-पत्र (Certificate of Completion) दिया जाएगा ।

एक-वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए पहले छह पाठ्यक्रम निर्धारित कर लिए गए हैं । इस कार्यक्रम को 1994 में शुरू करने का प्रस्ताव किया गया है । इन पाठ्यक्रमों की तैयारी का काम भी शुरू कर लिया गया है ।

वर्ष 1992-93 के दौरान विद्यापीठ के स्कूल बोर्ड की दो बैठकें क्रमशः 18 मई 1992 तथा 23 फरवरी 1993 को हुई ।

6.3 इंजीनियरी तथा प्रौद्योगिकी विद्यापीठ

वर्ष 1992-93 के दौरान, इंजीनियरी तथा प्रौद्योगिकी विद्यापीठ स्नातकोत्तर डिप्लोमा स्तर के दो कार्यक्रमों को तैयार करने का कार्य कर रहा है । इन कार्यक्रमों के नाम हैं —**निर्माण प्रबंध में उच्च डिप्लोमा** (ए.डी.सी.एम.); और **जल संसाधन इंजीनियरी में उच्च डिप्लोमा** (ए.डी.डब्ल्यू.आर.ई.) ।

इन दोनों रोज़गारोन्मुखी कार्यक्रमों को तकनीकी संस्थाओं, औद्योगिक तथा संबंधित नियोक्ता वर्ग के सहयोग और भागीदारी से बनाने की योजना बनाई गई तथा उन्हीं के सहयोग और भागीदारी से इन कार्यक्रमों को विकसित किया जा रहा है । ये कार्यक्रम उन सेवारत कर्मचारियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं, जिन्होंने पॉलिटेक्नीक से इंजीनियरी में डिप्लोमा किया है तथा जिन्हें कार्य का अनुभव है । इन दोनों कार्यक्रमों को जारी रखकर क्रमशः बी.टेक. सिविल (निर्माण प्रबंध) (B.Tech. Civil (Construction Management)) तथा बी.टेक. सिविल (जल संसाधन) (B.Tech. Civil (Water Resources)) तक किया जा सकेगा । ये उच्च डिप्लोमा कम से कम 3 वर्ष की अवधि में किए जा सकेंगे और प्रौद्योगिकी स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के लिए 3 वर्ष और लगेंगे ।

जुलाई, 1994 से आरंभ किए जाने वाले इन दोनों उच्च डिप्लोमा कार्यक्रमों का वर्षवार पाठ्यक्रम पंजीकरण निम्न प्रकार से है :

तालिका 3 : ए.डी.सी.एम. के पाठ्यक्रमों में पंजीकरण की वर्षवार योजना

ए.डी.सी.एम. के अंतर्गत आने वाले पाठ्यक्रम		क्रेडिट
प्रथम वर्ष		**20**
ई.टी. 101	गणित	6
ई.टी. 105	भौतिकी और रसायन विज्ञान	8
ई.टी. 202	इंजीनियरी विज्ञान – I	6
द्वितीय वर्ष		**24**
ई.टी. 204	पदार्थ विज्ञान और इंजीनियरी सामग्री	4
ई.टी. 301	इंजीनियरी विज्ञान और विश्लेषण – I	4
ई.टी. 501	मृदा यांत्रिकी और आधार इंजीनियरी	4
ई.टी. 521	भवन निर्माण	8
ई.टी. 581	ऐच्छिक – I	4
तृतीय वर्ष		**20**
ई.टी. 523	निर्माण पर्यवेक्षण एवं भवनों की मरम्मत	8
ई.टी. 524	इंजीनियरी प्रबंध एवं अर्थशास्त्र के सिद्धांत एवं निर्माण प्रबंध – I	6
ई.टी. 522	कंकरीट प्रोद्योगिकी एवं निर्माण प्रोद्योगिकी	4
ई.टी. 571	प्रयोगशाला – I	2
	कुल क्रेडिट	64

तालिका 4 : ए.डी.डब्ल्यू.आर.ई. के पाठ्यक्रमों में पंजीकरण की वर्षवार योजना

ए.डी.डब्ल्यू.आर.ई. के अंतर्गत आने वाले पाठ्यक्रम		क्रेडिट
प्रथम वर्ष		**21**
ई.टी. 101	गणित	6
ई.टी. 105	भौतिकी और रसायन विज्ञान	8
ई.टी. 202	इंजीनियरी विज्ञान	7
द्वितीय वर्ष		**22**
ई.टी. 531	भू और मृदा विज्ञान	8
ई.टी. 301	इंजीनियरी प्रबंध एवं अर्थशास्त्र के सिद्धांत	3
ई.टी. 501	मृदा यांत्रिकी और आधार इंजीनियरी	4
ई.टी. 532	जल विज्ञान और भूमिगत जल विकास	7
तृतीय वर्ष		**21**
ई.टी. 533	ओपन चैनल प्रवाह एवं सिंचाई इंजीनियरी	8
ई.टी. 502	पदार्थ एवं संरचनात्मक विश्लेषण क्षमता	7
ई.टी. 534	प्रणाली विधियाँ और जल संसाधन योजना	5
ई.टी. 573	प्रयोगशाला – I	1
	कुल क्रेडिट	64

विद्यापीठ ने देश के भिन्न-भिन्न केंद्रों में तकनीकी और व्यावसायिक संगठनों में पाठ्यक्रम दलों के सम्पर्क से पाठ्यक्रम निर्माण में परियोजना-आधारित दृष्टिकोण अपनाया है । इन संगठनों में से कुछ के नाम इस प्रकार हैं – दिल्ली, बंबई और मद्रास स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.); अन्ना विश्वविद्यालय; मद्रास; पूना विश्वविद्यालय; दिल्ली विश्वविद्यालय; रूड़की विश्वविद्यालय; सागर विश्वविद्यालय; वी.जे.टी.आई., बंबई; सी.एम.ई., पुणे; दिल्ली स्थिति केंद्रीय लोक निर्माण विभाग और राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम (एन.बी.सी.सी.); तथा बंबई स्थित गैमन इंडिया लिमिटेड; गिरज़ी ईस्टर्न (इं0) लि0/स्टुटवेल डिज़ाइनर (प्राइवेट) लिमिटेड आदि । इन कार्यक्रमों के सभी पाठ्यक्रमों को विद्यापीठ द्वारा कंप्यूटर पर तैयार किया जा रहा है ताकि इनका निर्माण आदि कार्य शीघ्रता से हो सके ।

जुलाई, 1994 से प्रस्तावित प्रवेश के पहले बैच में इन दोनों उच्च डिप्लोमा कार्यक्रमों में विद्यार्थियों की संख्या एक-एक हज़ार तक सीमित रखी जाएगी । चुने हुए 20 अध्ययन केंद्रों पर इन कार्यक्रमों को शुरू किया जाएगा और प्रत्येक अध्ययन केंद्र पर इन दोनों कार्यक्रमों के 50-50 विद्यार्थी होंगे ।

इंजीनियरी शिक्षा के क्षेत्र और व्यवहारोन्मुखी अध्ययन की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक अध्ययन केंद्र को इंजीनियरी कॉलेज और समुचित उद्योग से संलग्न किया जाएगा । ये इंजीनियरी कॉलेज

तथा उद्योग उप-केंद्रों के रूप में कार्य करेंगे । इस प्रकार इन दोनों उच्च डिप्लोमा कार्यक्रमों के लिए विद्यमान अध्ययन केंद्रों के स्थानों पर इंजीनियरी कॉलेजों तथा समुचित उद्योग के 20-20 उप-केंद्रों का निर्धारण किया जाएगा ।

विद्यापीठ के स्कूल बोर्ड की बैठकें वर्ष में दो बार—17.6.1992 तथा 24.11.1992 को हुईं ।

6.4 शिक्षा विद्यापीठ

विद्यापीठ ने निम्नलिखित दो कार्यक्रम शुरू किए हैं :

i) एक वर्ष का "उच्च शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा " (पी.जी.डी.एच.ई.) कार्यक्रम 1991-92 के दौरान शुरू किया गया ;

ii) छह महीने का "मार्गदर्शन में प्रमाण-पत्र" (सी.आई.जी.) कार्यक्रम 1991-92 के दौरान शुरू किया गया ।

वर्ष 1992-93 के दौरान "उच्च शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा " कार्यक्रम में 938 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया ।

मार्गदर्शन में प्रमाण-पत्र कार्यक्रम के 1,081 विद्यार्थियों के पहले बैच के लिए पाठ्यक्रम कार्य जनवरी, 1993 से शुरू हुआ । 11 क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत 56 अध्ययन केंद्र इस कार्यक्रम का संचालन कर रहे हैं । इस कार्यक्रम में चार-चार क्रेडिटों के निम्नलिखित चार पाठ्यक्रम हैं :

ई.एस. 101 आरंभिक विद्यालय के बच्चों को समझना

ई.एस. 102 वृद्धि और विकास सुकर बनाना

इ.एस. 103 बाल शिक्षा निर्देशन

ई.एस. 104 बच्चों के सामाजिक-भावात्मक विकास का निर्देशन

इस कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के सहयोग से विकसित किया गया है । इन कार्यक्रमों का हिंदी रूपांतर 1992-93 के दौरान तैयार किया जा रहा है । जनवरी, 1994 से इस कार्यक्रम को हिंदी माध्यम से भी शुरू करने का प्रस्ताव किया गया है ।

प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए 1992-93 के दौरान एक नए द्वि-वर्षीय "प्राथमिक शिक्षा में डिप्लोमा" (डी.पी.ई.) कार्यक्रम की रूपरेखा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के सहयोग से विकसित की गई । डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम और इसकी परिचालनात्मक कार्यनीतियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है । इस प्रकार का सहयोग सतत रूप में चलता रहे, इसके लिए वर्ष के दौरान अध्यापक-शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के बीच आशय-पत्र पर हस्ताक्षर हुए ।

विद्यापीठ, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के सहयोग से मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम भी शुरू करना चाहता है । कार्यक्रम के ब्यौरे तैयार किए जा रहे हैं ।

विद्यापीठ 1987 में शुरू किए गए "दूर शिक्षा में डिप्लोमा " कार्यक्रम में भी सहायता कर रहा है, यद्यपि इस कार्यक्रम का संचालन दूर शिक्षा प्रभाग का संकाय करता है । वर्ष के दौरान, दूर शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम शुरू किया गया । जिन विद्यार्थियों ने दूर शिक्षा में डिप्लोमा सफलतापूर्वक पूरा किया है, वे स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम में प्रवेश के लिए पात्र हैं ।

वर्ष 1992-93 के दौरान शिक्षा विद्यापीठ के स्कूल बोर्ड की एक बैठक हुई ।

6.5 स्वास्थ्य विज्ञान विद्यापीठ

स्वास्थ्य विज्ञान विद्यापीठ सेवारत नर्सों के लिए नर्सिंग में बी.एस-सी. कार्यक्रम तैयार कर रहा है । इस कार्यक्रम का उद्देश्य कार्यरत नर्सों को स्वास्थ्य और नर्सिंग के क्षेत्र में व्यावसायिक अर्हताएँ बढ़ाने तथा अपना ज्ञान एवं दक्षता को अद्यतन करने का अवसर प्रदान करना है ।

बी.एस-सी. नर्सिंग कार्यक्रम के दो घटक हैं । ये हैं — सिद्धांत और व्यवहार । सिद्धांत घटक के 36 क्रेडिटों के 10 पाठ्यक्रम हैं । इनमें से 44 क्रेडिट के 8 पाठ्यक्रम व्यावहारिक घटक के हैं ।

विद्यापीठ ने सैद्धांतिक और व्यावहारिक, दोनों घटकों की स्व-निर्देशात्मक सामग्री तैयार करने के लिए लेखकों के लिए तीन अभिविन्यास कार्यशालाएँ आयोजित कीं । इसके बाद पाठ्यक्रम सामग्री की तैयारी को अंतिम रूप देने के लिए पाठ लेखकों/संपादकों से साथ कई बैठकें हुईं ।

विद्यापीठ ने पाठ्यक्रमों को तैयार करने के लिए विकेंद्रीकृत दृष्टिकोण अपनाया है । नर्सिंग और इससे संबंधित विषयों के 60 बाहरी विशेषज्ञों की सहायता से छोटा-सा संकाय मुद्रण, श्रव्य/दृश्य सामग्री, प्रायोगिक मैनुअलों, अभ्यास पुस्तकों आदि के रूप में पाठ्यक्रम सामग्री निर्माण में जुटा हुआ है ।

कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए विद्यापीठ ने मेडिकल कॉलेजों और नर्सिंग कॉलेजों में स्थित 24 अभ्यास केंद्र निर्धारित किए हैं । कार्यक्रम के संचालन के लिए इन क्रेंद्रों में आधारिक संरचना उपलब्ध है ।

कार्यक्रम को प्रायोगिक आधार पर वर्ष 1994 के दौरान शुरू करने का प्रस्ताव किया गया है । इसमें 500 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाएगा ।

विद्यापीठ द्वारा विकसित नर्सिंग कार्यक्रम का पाठ्य-विवरण भारतीय नर्सिंग परिषद् की शिक्षा समिति को उसके अनुमोदन के लिए भी प्रस्तुत किया गया है ।

विद्यापीठ ने फरवरी, 1993 में मेडिकल और परा-मेडिकल कार्मिकों के लिए भावी कार्यक्रम तथा सामान्य जनता के लिए स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम विकसित करने के लिए संभावित क्षेत्रों का पता लगाने के लिए विशेषज्ञ समिति की बैठक आयोजित की । नए कार्यक्रम विकसित करने के लिए इस बैठक में निम्नलिखित क्षेत्र निर्धारित किए गए :

1. जानपदिक रोग विज्ञान सेवाएँ और स्वास्थ्य प्रबंध पाठ्यक्रम
2. परिवार नियोजन और एम.सी.एच. पाठ्यक्रम
3. एच.एफ.ए. 2000 के सिद्धांत और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा
4. स्वास्थ्य शिक्षा
5. जरा चिकित्सा सेवा
6. विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों — जैसे राष्ट्रीय कैंसर नियंत्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय क्षयरोग

नियंत्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम—के लिए स्वास्थ्य जागरूकता ।

स्वास्थ्य विज्ञान विद्यापीठ के स्कूल बोर्ड की दो बैठकें वर्ष 1992–93 के दौरान हुईं ।

6.6 मानविकी विद्यापीठ

कार्यक्रम और पाठ्यक्रम

मानविकी विद्यापीठ अंग्रेज़ी और हिंदी विषयों में बी.ए. कार्यक्रम के लिए कई ऐच्छिक पाठ्यक्रम चला रहा है । मार्च, 1993 तक विद्यापीठ ने इन दोनों विषयों में सात–सात पाठ्यक्रम तैयार किए हैं । रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, निम्नलिखित पाठ्यक्रम विकसित किए गए :

1. बी.ए. (अंग्रेज़ी)
   - i) अंडरस्टैंडिंग ड्रामा
   - ii) दी नॉवल
2. बी.ए. (हिंदी)
   - i) मध्यकालीन भारतीय साहित्य : संस्कृति और समाज
   - ii) आधुनिक भारतीय साहित्य : राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण
   - iii) प्रयोजनमूलक हिंदी

स्नातक उपाधि कार्यक्रम के अलावा, विद्यापीठ अंग्रेज़ी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा कार्यक्रम भी चला रहा है । वर्ष के दौरान, विद्यापीठ ने हिंदी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू किया ।

अन्य कार्यकलाप

वर्ष के दौरान विद्यापीठ के संपादकीय और अनुवाद एकक ने पाठ्यक्रम सामग्री की 150 इकाइयों का अनुवाद के अलावा पाठ्यक्रम सामग्री की 200 इकाइयों तथा विश्वविद्यालय के 12 अन्य प्रकाशनों का संपादन किया । वर्ष के दौरान "इं.गां.रा.मु.वि. न्यूज़लेटर" के दो अंक भी निकाले गए । इन अंकों में विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक जानकारी जैसे वर्ष के दौरान अध्ययन सामग्री के प्रेषण, परामर्श, सत्रीय कार्य प्रस्तुतीकरण, सत्रांत परीक्षा आदि की अनुसूचियाँ दी गई थीं ।

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान निम्नलिखित पाठ्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं :

- क) फंक्शनल इंगलिश
- ख) विभिन्न सामाजिक वर्ग और लेखन (डी.सी.एच.)
- ग) कविता लेखन (डी.सी.एच.)

वर्ष के दौरान निम्नलिखित नए कार्यक्रमों की योजना बनाई जा रही थी :

- क) अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
- ख) अंग्रेज़ी अध्ययन में स्नातकोत्तर प्रमाण–पत्र

विश्वविद्यालय द्वारा विकास के लिए निर्धारित निर्देशों के अनुसार, विद्यापीठ गैर-परंपरागत क्षेत्रों में नए कार्यक्रम और पाठ्यक्रम तैयार करने तथा निर्माण करने का प्रयास कर रहा है । संपादक, प्रूफ पठन, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, तुलनात्मक आधुनिक भारतीय साहित्य आदि जैसे क्षेत्रों में प्रमाण-पत्र और डिप्लोमा कार्यक्रम विकसित करने का प्रारंभिक कार्य किया जा रहा है ।

मानविकी विद्यापीठ के स्कूल बोर्ड की वर्ष 1992-93 के दौरान दो बैठकें क्रमशः 22.4.1992 तथा 11.1.1993 को हुई ।

6.7 प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ

विद्यापीठ ने वर्ष के दौरान विशेषीकृत क्षेत्रों में तीन नए पाठ्यक्रम जोड़े हैं । अब प्रबंध पाठ्यक्रमों की कुल संख्या 32 हो गई है । विद्यापीठ ने वाणिज्य में स्नातक उपाधि के लिए 14 पाठ्यक्रमों का योगदान दिया है । विद्यापीठ द्वारा जनवरी, 1994 तक विशेषीकृत क्षत्रों में तीन तथा वाणिज्य में दो अन्य व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम जोड़ने की योजना है ।

विद्यापीठ ने दो नए कार्यक्रमों, अर्थात् उच्च लेखाविधि में स्नातकोत्तर डिप्लोमा; और होटल तथा पर्यटन प्रबंध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा तैयार करने की कार्रवाई शुरू कर दी है ।

विद्यापीठ द्वारा निर्मित प्रबंध पाठ्यक्रमों को दो राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों ने अपनाकर अपने-अपने विश्वविद्यालयों में प्रबंध कार्यक्रम शुरू किए हैं । रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान उल्लेखनीय प्रगति यह हुई कि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और ओपन लर्निंग इंस्टीट्यूट, हांगकांग के बीच एक अनुबंध पर हस्ताक्षर हुए, जिसके अनुसार रॉयल्टी के भुगतान के आधार पर ओपन लर्निंग इंस्टीट्यूट, हांगकांग को अपने संस्थान में प्रबंध कार्यक्रमों के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम अपनाने की अनुमति दी गई है । विकासशील देशों में प्रबंध तथा नेतृत्व में स्नातकोत्तर स्तरीय प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम सामग्री के विकास/अंगीकरण पर पिछली दो कार्यशालाओं के अनुसरण में विद्यापीठ ने कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग के तत्वावधान में मई, 1993 में तीसरी कार्यशाला आयोजित करना स्वीकार किया ।

शैक्षिक परिषद् के निर्णयानुसार, वर्तमान प्रबंध में उच्च डिप्लोमा का नाम 1994 से " प्रबंध में स्नातकोत्तर डिप्लोमा " होगा । इसी प्रकार, वर्तमान विशेषीकृत डिप्लोमा कार्यक्रमों के नाम 1994 से स्नातकोत्तर विशेषीकृत डिप्लोमा कार्यक्रम होंगे ।

6.8 विज्ञान विद्यापीठ

विद्यापीठ ने 1991-92 के दौरान 29 अध्ययन केंद्रों में बी.एस-सी. कार्यक्रम शुरू किया । रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, इस कार्यक्रम को 5 अन्य अध्ययन केंद्रों में भी शुरू किया गया । जनवरी 1992 में इस कार्यक्रम में 1465 विद्यार्थियों को दाखिला दिया गया । जनवरी 1994 से 5 अन्य अध्ययन केंद्रों में भी यह कार्यक्रम चलाया जाएगा जिससे इस कार्यक्रम में अधिक विद्यार्थी दाखिला ले सकेंगे ।

वर्ष 1993 के दौरान, छह चुनिंदा अध्ययन केंद्रों में पहले बैच के विद्यार्थियों के लिए रसायन विज्ञान और भौतिकी के प्रयोगशाला पाठ्यक्रम चलाए गए । यह निर्णय किया गया है कि 1994 में शेष सभी अध्ययन केंद्रों में सभी विज्ञान विषयों के प्रयोगशाला पाठ्यक्रम चलाए जाएँगे ।

वर्ष 1992–93 के दौरान निम्नलिखित नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए :

गणित

- आरंभिक बीजगणित
- विश्लेषणात्मक बीजगणित
- संख्यात्मक विश्लेषण
- संभाव्यता और सांख्यिकी
- रेखीय प्रोग्रामन

भौतिकी

- गणितीय भौतिकी विधियाँ–I
- गणितीय भौतिकी विधियाँ–II
- थर्मोडायनेमिक्स एवं सांख्यिकीय यांत्रिकी
- विद्युतीय एवं चुंबकीय परिघटना
- भौतिकी प्रयोगशाला–II

रसायन विज्ञान

- भौतिक रसायन विज्ञान
- कार्बनिक रसायन विज्ञान
- कार्बनिक प्रतिक्रिया तंत्र
- रसायन विज्ञान प्रयोगशाला–I
- रसायन विज्ञान प्रयोगशाला–II

जीवन विज्ञान

- शरीर विज्ञान
- आनुवंशिकी
- वर्गीकरण विज्ञान एवं विकास
- जीवन विज्ञान प्रयोगशाला–III

निम्नलिखित पाठ्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं :

गणित

- गणित शिक्षण (व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम)

भौतिकी

- प्रकाशिक
- वैद्युत परिपथ और इलैक्ट्रॉनिकी
- आधुनिक भौतिकी
- भौतिकी प्रयोगशाला–II
- कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और अनुप्रयोग (व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम)

रसायन विज्ञान

- जैव रसायन
- स्पेक्ट्रम विज्ञान
- रसायन विज्ञान प्रयोगशाला–IV
- रसायन विज्ञान प्रयोगशाला– V
- वातावरणीय रसायन विज्ञान

जीवन विज्ञान

- परिवर्धन जीवविज्ञान
- प्रयोगशाला पाठ्यक्रम– II
- प्राणी विविधता– I
- वनस्पति विविधता– I

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान विज्ञान विद्यापीठ के विद्यापीठ बोर्ड की एक बैठक हुई । भौतिकी विशेषज्ञ समिति पुनर्गठित की गई और इस अवधि के दौरान इसकी दो बैठकें हुईं । गणित विशेषज्ञ समिति की एक बैठक हुई ।

6.9 सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

पाठ्यक्रमों का अनुरक्षण

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

विद्यापीठ निम्नलिखित पांच विषयों में विश्वविद्यालय के स्नातक उपाधिक कार्यक्रम में योगदान कर रहा है :

- अर्थशास्त्र
- इतिहास
- राजनीति विज्ञान
- लोक प्रशासन
- समाजशास्त्र

वर्ष 1992–93 के दौरान विद्यापीठ ने राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, समाजशास्त्र के चार–चार ; तथा अर्थशास्त्र और इतिहास के पाँच–पाँच ऐच्छिक पाठ्यक्रमों (जो पहले से चल रहे थे) का अनुरक्षण किया ।

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातक उपाधि

विद्यापीठ, 1989 से पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम भी संचालित कर रहा है । इन पाठ्यक्रमों के अनुरक्षण का कार्य भी इस वर्ष किया गया ।

तैयार किए जा रहे पाठ्यक्रम

वर्ष 1992–93 के दौरान अंग्रेज़ी और हिंदी में निम्नलिखित कार्यक्रम विकसित तथा तैयार किए जा रहे थे :

1. राजनीति विज्ञान
   i) दक्षिण एशिया में सरकार और राजनीति
   ii) पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया में सरकार और राजनीति
2. लोक प्रशासन
   i) वित्त प्रशासन
   ii) लोक नीति
3. समाजशास्त्र
   i) समाज और धर्म
   ii) भारत में सामाजिक समस्याएँ
4. अर्थशास्त्र
   i) आर्थिक विकास के प्रतिमान : तुलनात्मक अध्ययन
5. इतिहास
   i) भारत का इतिहास: 16वीं शताब्दी के मध्य से 18वीं शताब्दी के मध्य तक

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

विद्यापीठ पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम तैयार कर रहा है । इस कार्यक्रम की अवधि एक वर्ष होगी । इसमें छह अनिवार्य तथा दो ऐच्छिक पाठ्यक्रम होंगे । पाठ्यक्रमों के विकास और तैयारी का काम प्रगति पर है । आशा है कि यह कार्यक्रम 1994 में आरंभ हो जाएगा ।

प्रस्तावित नए कार्यक्रम

इसके अलावा, इस अवधि के दौरान विद्यापीठ निम्नलिखित पाठ्यक्रमों की योजना पर काम कर रहा है :

विषय	कार्यक्रम	प्रमाण–पत्र/डिप्लोमा
इतिहास	पर्यटन	प्रमाण–पत्र
लोक प्रशासन	लोक नीति	डिप्लोमा
समाजशास्त्र	ग्रामीण महिलाओं द्वारा वन प्रबंद	प्रमाण–पत्र
समाजशास्त्र	महिलाओं के सामूहिक अधिकार	डिप्लोमा
अर्थशास्त्र	विदेश व्यापार	डिप्लोमा
राजनीति विज्ञान	संसदीय व्यवहार और कार्यविधियाँ	डिप्लोमा
सामाजिक विज्ञान	जनसंख्या अध्ययन	डिप्लोमा

सत्रीय कार्यों का निर्माण

वर्ष 1992–93 के दौरान, विद्यापीठ ने अंग्रेज़ी और हिंदी में सत्रीय कार्यों के कुल 44 सेट (प्रत्येक सेट में तीन सत्रीय कार्य) बनाए ।

इसके अलावा, विद्यापीठ लगभग हर विषय में सत्रीय कार्य बैंक तैयार करने में लगा हुआ है ।

वर्ष 1992–93 के दौरान सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के स्कूल बोर्ड की दो बैठकें क्रमश : 11.5.1992 तथा 23.12.1992 को हुई ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के साथ समझौते पर हस्ताक्षर

इं.गां.रा.मु.वि. के आठवीं योजना प्रस्तावों के कार्यान्वयन पर कार्यशाला

7. शैक्षिक सहायता सेवाएँ

7.1 दूर शिक्षा प्रभाग

विद्यापीठों को सहायता

दूर शिक्षा प्रभाग ने वर्ष 1992–93 के दौरान निम्नलिखित क्षेत्रों में विभिन्न विद्यापीठों को सहायता प्रदान की :

— निर्देशात्मक सामग्री डिज़ाइन

— कर्मचारी विकास

— कार्यक्रम मूल्यांकन

प्रभाग ने पाठ्यक्रम सामग्री की साज–सज्जा (फॉर्मेट) और प्रस्तुतीकरण सुधारने के लिए अध्ययन विद्यापीठों द्वारा विकसित विभिन्न पाठ्यक्रमों की 136 से अधिक इकाइयों का संपादन किया ।

दूर शिक्षा प्रभाग के संकाय ने विभिन्न अध्ययन विद्यापीठों द्वारा पाठ लेखकों और क्षेत्रीय सेवा प्रभाग द्वारा शैक्षिक परामर्शदाताओं के अभिविन्यास कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया ।

इसके अलावा, प्रभाग ने पाठ्यक्रम विकास के लिए दो परिचयात्मक कार्यशालाओं का आयोजन किया । इन कार्यशालाओं से विश्वविद्यालय में नव–नियुक्त संकाय को स्व–निर्देशात्मक सामग्री, पाठ्यक्रम तैयार करना आदि जैसे उनके (संकाय के) कार्यों को सुविधापूर्वक करने में सहायता मिलेगी ।

प्रभाग ने विभिन्न श्रेणियों के गैर–शैक्षिक कर्मचारियों के लिए आठ अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए । इनमें से छह कार्यक्रम मुख्यालय में और दो कार्यक्रम क्षेत्रीय केंद्रों में आयोजित किए गए । साथ ही, गैर–शैक्षिक कर्मचारियों को कक्ष मुद्रण (डी.टी.पी.) पद्धति से परिचित कराने के लिए मुख्यालय में दो कौशल–आधारित परिचयात्मक कार्यक्रम आयोजित किए गए । इसके अलावा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के 15 गैर–शैक्षिक कर्मचारियों को विश्वविद्यालय से बाहर के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भेजा गया ।

इनके अलावा, प्रभाग ने देश में अन्य संस्थाओं में आयोजित विभिन्न कार्यशालाओं/सेमिनारों/प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहायता उपलब्ध कराई ।

तालिका 5 : शैक्षिक स्टाफ के लिए स्टाफ विकास कार्यक्रम (दूर शिक्षा प्रभाग)

कार्यक्रम का विवरण	स्थान	तारीख	लाभग्राहियों का विवरण तथा संख्या
1. पाठ्यक्रम सामग्री निर्माण के प्रशिक्षण पर कार्यशाला (इं.गां.रा.मु.वि. के स्टाफ के लिए)	इं.गां.रा.मु.वि. नई दिल्ली	11.1.93–22.1.93	15 शिक्षक 3 प्रोफेसर, 5 रीडर और 7 लेक्चरर
2. दूर शिक्षा संस्थाओं के शैक्षिक स्टाफ (दिल्ली, हिमाचल तथा पंजाबी विश्वविद्यालयों के) के लिए स्व–शिक्षण पाठ्य सामग्री विकास पर कार्यशाला	प्रोफेशनल विकास केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय	4.8.92–19.8.92	22 लेक्चरर/रीडर
3. दूर शिक्षा सामग्री विकास	मॉरिशस शिक्षा संस्थान, मॉरिशस	24.9.92–8.10.92	मॉरिशस शिक्षा संस्थान के 35 स्टाफ सदस्य
4. पाठ्यक्रम सामग्री पर आई.सी.डी.ई. की प्री–कॉन्फ्रेंस कार्यशाला (दूर शिक्षा प्रभाग के सदस्यों ने रिसोर्स पर्सन के रूप में भाग लिया)	सुकोताई थमाथीराट ओपन यूनिवर्सिटी, थाईलैंड	4.11.92–10.11.92	विभिन्न देशों से 80 प्रतिनिधि
5. इं.गां.रा.मु.वि. के विभिन्न कार्यक्रमों के पाठ लेखकों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम (दूर शिक्षा प्रभाग के सदस्यों ने रिसोर्स पर्सन के रूप में भाग लिया)	इं.गां.रा.मु.वि. परिसर	1 और 2 दिन के 3 कार्यक्रम	प्रत्येक में 10–15 तक प्रतिनिधियों ने भाग लिया
6. इं.गां.रा.मु.वि. के विभिन्न पाठ्यक्रमों से संबद्ध शैक्षिक परामर्शदाताओं के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम (दूर शिक्षा प्रभाग के सदस्यों ने रिसोर्स पर्सन के रूप में भाग लिया)	विश्व युवक केंद्र, नई दिल्ली	एक–एक दिन के 7 कार्यक्रम	प्रत्येक में 15–20 प्रतिनिधियों ने भाग लिया

तालिका 6 : गैर–शैक्षिक स्टाफ के लिए स्टाफ विकास कार्यक्रम (दूर शिक्षा प्रभाग)

कार्यक्रम	लाभग्राही
1. द्वि–दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम (चार कार्यक्रम)	अनुभाग अधिकारी, वरिष्ठ निजी सहायक, वरिष्ठ सहायक, निजी सहायक – II (कुल मिलाकर 54 कर्मचारी)
2. प्रभावी कार्यालय सहयोग पर प्रशिक्षण कार्यशाला (26.5.92 से 5.6.92)	वरिष्ठ सहायक, निजी सहायक – II (कुल मिलाकर 12 कर्मचारी)
3. क्षेत्रीय केंद्रों के स्टाफ के लिए द्वि–दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम (बंगलौर तथा कलकत्ता में आयोजित)	क्षेत्रीय केंद्रों का प्रशासनिक स्टाफ (कुल मिलाकर 40 स्टाफ सदस्य)

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के स्टाफ सदस्यों को अन्य संगठनों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए भी नामित किया गया । 14 कर्मचारियों ने ऐसे 6 भिन्न–भिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया ।

सामग्री आदि का निर्माण

दूर शिक्षा प्रभाग ने निम्नलिखित योगदान किया :

— दूर शिक्षा में डिप्लोमा (डी.डी.ई.) कार्यक्रम के लिए 12 सत्रीय कार्यों का विकास

— दूर शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए.डी.ई.) कार्यक्रम के लिए 15 सत्रीय कार्यों का विकास

— दूर शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए.डी.ई.) कार्यक्रम के लिए 2 कार्यक्रम दर्शिकाओं का विकास

— दूर शिक्षा में डिप्लोमा (डी.डी.ई.) करने वाले विद्यार्थियों के 114 परियोजना प्रस्तावों का मूल्यांकन

— दूर शिक्षा में डिप्लोमा कार्यक्रम करने वाले विद्यार्थियों की 103 परियोजना रिपोर्टों का मूल्यांकन और स्वीकृति

इसके अलावा, प्रभाग ने वर्ष 1992–93 के दौरान निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्यों को भी किया :

— दूर शिक्षा में डिप्लोमा कार्यक्रम का अनुरक्षण

— दूर शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि के लिए पाठ्यक्रम विकास को अंशतः (17 खंडों में से 8 खंड) पूरा किया गया ।

— मार्च, 1993 में दूर शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम का आरंभ ।

अन्य कार्यकलाप

इनके अलावा, प्रभाग द्वारा निम्नलिखित कार्य किए गए :

— इंडियन जर्नल ऑफ ओपन लर्निंग के 2 अंकों का प्रकाशन (इन जर्नल के संबंध में अलग भाग में और अधिक जानकारी दी जा रही है) ।

— दो दृश्य कार्यक्रमों का विकास ।

— गैर-शैक्षिक कर्मचारियों के लिए " इफैक्टिव ऑफिस सपोर्ट " (Effective Office Support) नामक प्रशिक्षण मैनुअल का पुनःमुद्रण ।

— आई.जी.एन.ओ.यू. हैंडबुक 1993 का प्रकाशन ।

— मानव संसाधन विकास मंत्रालय के लिए " IGNOU Programme in Staff Development for Professional and Support Staff " नामक दस्तावेज़ तैयार करना ।

पाठ्यक्रम सामग्री के गुणात्मक पहलुओं और शैक्षिक परामर्शदाताओं के विचारों का मूल्यांकन अध्ययन जारी रहा ।

संकाय तथा स्टाफ के अन्य सदस्यों ने एन.ओ.एस., सी.डब्ल्यू.सी.ई.ए., सी.आई.ई.एफ.एल., एन.सी.ई.आर.टी. आदि संस्थाओं में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं में विषय-विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया ।

दूर शिक्षा स्टाफ प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान (Staff Training and Research Institute of Distance Education—STRIDE)

प्रबंध बोर्ड के विचारार्थ और अनुमोदन के लिए, प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने का प्रस्ताव तैयार किया गया । यह संस्थान, दूर शिक्षा पद्धति में मानव संसाधन का विकास करेगा । इस संस्थान के संभावित कार्यकलापों और कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पहचानना, समुचित प्रशिक्षण कार्यनीतियों का विकास और निर्देशात्मक पैकेज देना तथा कर्मचारियों के विकास संबंधी कार्यकलापों को आयोजित करना शामिल है । इसकी आवश्यकता, कार्य-क्षेत्र और कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग से सहायता के संबंध में और अधिक जानकारी " कर्मचारी विकास संस्थान" शीर्षक भाग में दी जा रही है ।

7.2 संचार प्रभाग

दूर शिक्षा के लिए बहु-माध्यम शिक्षण सामग्री के रूप में श्रव्य-दृश्य (ऑडियो-वीडियो) कार्यक्रमों की योजना बनाने और निर्माण करने, संचार में शैक्षिक कार्यक्रमों को बनाने और शैक्षिक जन संपर्क माध्यम के लिए मानव संसाधन विकसित करने में संचार प्रभाग की विशिष्ट भूमिका है । शैक्षिक कार्यक्रम निर्माण इसका मुख्य क्षेत्र है और अब इसमें श्रोता प्रतिपुष्टि अनुसंधान भी किया जाता है ।

प्रसारण

प्रभाग द्वारा निर्मित शैक्षिक कार्यक्रम मुख्य रूप से अनुपूरक सामग्री के रूप में प्रयोग करने के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के विभिन्न क्षेत्रीय/अध्ययन केंद्रों को भेजे जाने के लिए होते हैं । उनका उपयोग, इलैक्ट्रॉनिक माध्यम द्वारा भी रेडियो/दूरदर्शन प्रसारण के लिए किया जाता है । मई, 1991 से दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क द्वारा (वीडियो) कार्यक्रम प्रसारण किए जा रहे हैं । आकाशवाणी के बंबई और हैदराबाद केंद्रों से श्रव्य (ऑडियो) कार्यक्रमों का प्रसारण जनवरी, 1992 से शुरू हुआ ।

तालिका 7 : इं.गां.रा.मु.वि. के कार्यक्रमों का दूरदर्शन और आकाशवाणी से प्रसारण

दूरदर्शन प्रसारण		
दिन	समय	कार्यक्रम
सोमवार	सुबह 6.25 से 6.55	स्नातक स्तरीय
बुधवार	सुबह 6.25 से 6.55	अन्य (स्नातक स्तरीय तथा प्रबंध अध्ययन के अतिरिक्त)
शुक्रवार	सुबह 6.25 से 6.55	प्रबंध अध्ययन

आकाशवाणी से प्रसारण			
स्टेशन	दिन	समय	माध्यम
बंबई	सोमवार, बृहस्पतिवार, शनिवार	सुबह 7.15 से 7.45	हिन्दी
हैदराबाद	मंगलवार, बृहस्पतिवार, शनिवार	सुबह 6.00 से 6.30	अग्रेज़ी

शैक्षिक कार्यक्रम

प्रभाग " पत्रकारिता और जन-संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा " कार्यक्रम तैयार कर रहा है । इस कार्यक्रम को 1994 के दौरान शुरू करने का प्रस्ताव है । कार्यक्रम से संबंधित पाठों और दृश्य-श्रव्य सामग्रियों की योजना बनाई जा रही है और इनका निर्माण भी किया जा रहा है ।

अनुसंधान

प्रभार द्वारा प्राप्त प्रश्नावलियों और दर्शकों के पत्रों से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविधालय प्रसारणों की उपयोगिता और प्रभाविता के मुल्यांकन के लिए अनुसंधान नियमित रूप से किए जा रहे हैं ।

" ओपन चैनल" नामक कार्यक्रम का प्रमुख अंग दर्शकों के प्रश्नों के उत्तर देना है, इस कार्यक्रम की पहली वर्षगांठ कुलपति के साक्षात्कार से मनाई गई । यह कार्यक्रम हमारे दर्शकों में बहुत ही लोकप्रिय पाया गया है ।

अब तक के निष्कर्षों से पता चलता है कि शिक्षण/अध्ययन की " मुक्त पद्धति" को भारतीय जनता धीरे-धीरे समझ रही है और दूरदर्शन से विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों का प्रसारण बहुत उपयोगी पाया गया है । प्रसारण-अवधि बढ़ाने की बहुत मांग है ।

दृश्य–श्रव्य कार्यक्रम निर्माण

विश्वविद्यालय द्वारा शुरू किए गए विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए संचार प्रभाग ने अब तक कुल 396 दृश्य कार्यक्रम और 538 श्रव्य कार्यक्रमों का निर्माण किया है । इनमें से 71 दृश्य कार्यक्रमों और 113 श्रव्य कार्यक्रमों का निर्माण अप्रैल, 1992 और मार्च 1993 के दौरान किया गया ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में " दी विक्टोरिएन ऐज" शीर्षक कार्यक्रम को प्रथम पुरस्कार मिला ।

प्रभाग ने पहले बी.बी.सी. के सहयोग से कार्यक्रमों का निर्माण किया था । स्नातक उपाधि कार्यक्रम के मानव पर्यावरण में व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम के लिए पर्यावरण पर दृश्य कार्यक्रम बनाने में कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (सी.ओ.एल.), कनाडा से भी अब इसी प्रकार का सहयोग लिया जा रहा है । ये कार्यक्रम श्रीलंका, बंगलादेश और पाकिस्तान के मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा भी प्रयुक्त किए जाएंगे ।

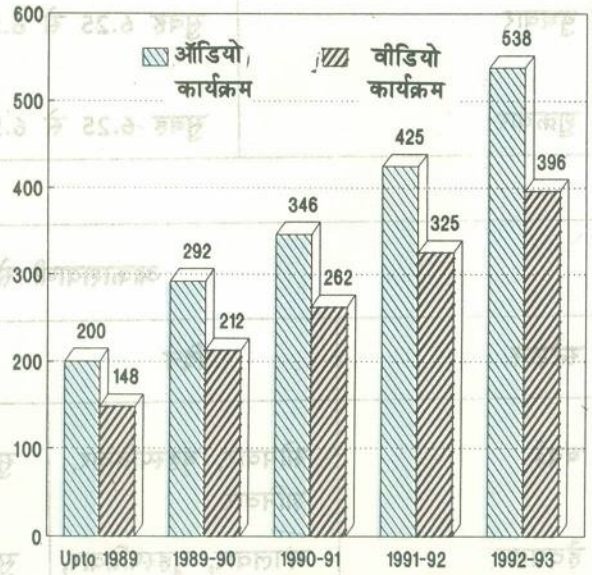

चित्र 8 : तैयार किए गए ऑडियो–वीडियो कार्यक्रम (वर्षवार–संचयी)

> कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग कनाडा ने राष्ट्रमंडल देशों के उपयोग के लिए विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित लगभग 88 दृश्य कार्यक्रमों का चयन बहुत कड़े परीक्षण के बाद किया है ।

मानव संसाधन विकास कार्यक्रम

प्रभाग ने प्रशिक्षण को उच्चतम प्राथमिकता दी है क्योंकि उपयुक्त प्रशिक्षण किसी व्यक्ति की गुणात्मक और परिमाणात्मक प्रगति के लिए निरंतर चलने वाली क्रिया है । देश–विदेश के विशेषज्ञों की सहायता से नियमित इन–हाउस प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं और प्रभाग के स्टाफ के सदस्यों को प्रशिक्षण के लिए विभिन्न संस्थाओं में भेजा गया है ।

योजना आयोग के उपाध्यक्ष, माननीय श्री प्रणव मुकर्जी, संचार प्रभाग के पोस्ट प्रोडक्शन सेंटर का उद्घाटन करते हुए (24.2.92)

कार्यशालाएँ/विचार गोष्ठियाँ

वीडयो कैमरा और प्रकाश व्यवस्था; ध्वनि रिकॉर्डिंग तकनीकों; वीडियो स्क्रिप्ट अनुरक्षण; वीडियो स्क्रिप्ट विकास; कार्यक्रम निर्माण और प्रस्तुतीकरण तकनीकों; वीडियो संपादन तकनीकों; वीडियो निर्माण तकनीकों आदि पर बी.बी.सी. के विशेषज्ञों की सहायता से कार्यशालाएँ/विचार गोष्ठियाँ आयोजित की गई । प्रमुख विषय निम्नलिखित थे :

1. सटुडियो आधारित निर्माण;
2. तकनीकी प्रक्रियाएँ; और
3. स्क्रिप्ट विकास

तालिका 8 : स्टाफ विकास कार्यक्रम (संचार प्रभाग)

कार्यशाला का विवरण	अवधि	ओ.डी.ए. परामर्शदाता	लाभग्राही
बहु–कैमरा स्टुडियो कार्यशाला (10 दिनों के दो बैचों में आयोजित)	22 सितंबर–14 अक्तूबर, 1992	श्री निकोलस वाट्सन	5 प्रोड्यूसर 10 प्रोडक्शन सहायक 3 कैमरा सहायक *
तकनीकी संचालन कार्यशाला	22 सितंबर–14 अक्तूबर, 1992	श्री जौन मैक विआ	3 सहायक इंजीनियर 10 तकनीकी सहायक * 6 टेक्नीशियन

* इनमें शैक्षिक संचार संकाय (consortium) से एक कैमरा सहायक तथा तकनीकी सहायक शामिल है ।

ओवरसीज़ डेवलपमेंट एडमिनिस्ट्रेशन (इंगलैंड) सहायता

ओवरसीज़ डेवलपमेंट एडमिनिस्ट्रेशन (इंगलैंड) ने प्रसारण कोटि के ऑडियो और वीडियो टेपों के निर्माण के लिए उन्नत यंत्र दिए हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत, दो किस्तों में 8,00,000 पौंड मूल्य के उपकरण दिए गए। पहली किस्त में यु-मैटिक एस. पी. संपादन उपकरण, वीडियो डुप्लीकेटिंग उपकरण 1989 में आए थे तथा दूसरी किस्त में टी.वी. स्टुडियो उपकरण और बाद में सम्बद्ध नियंत्रण भी। ये सभी प्रणालियाँ स्थापित की जा चुकी हैं और पूरी तरह से काम कर रही हैं।

ओ.डी.ए. द्वारा उपलब्ध कराए गए वीडियो-प्रोडक्शन उपस्कर का उद्घाटन 1 मार्च 1993 को श्री के.सी. पंत (दसवें वित्त आयोग के अध्यक्ष) के कर कमलों से। समारोह की अध्यक्षता भारत में ब्रिटिश उच्च आयुक्त सर निकोलस फैन ने की।

7.3 पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय पुस्तकालय पद्धति के अंतर्गत मुख्यालय में पुस्तकालय तथा क्षेत्रीय और अध्ययन केंद्रों में पुस्तकालय हैं। अध्ययन केंद्रों में स्थित पुस्तकालय विद्यार्थियों के उपयोग के लिए हैं। वर्ष 1992-93 में, पुस्तकालय ने केंद्रीय पुस्तकालय के लिए 5,021 पुस्तकें तथा क्षेत्रीय केंद्रों और अध्ययन केंद्रों के लिए 19,048 पुस्तकें प्राप्त कीं। इनका विवरण निम्न प्रकार से है :

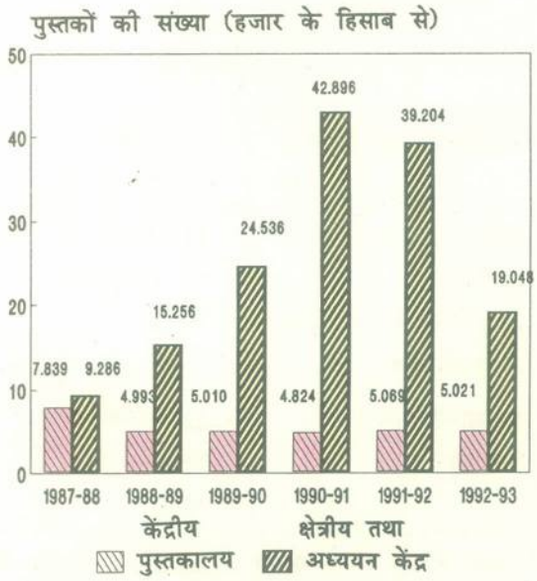

चित्र 9 : पुस्तकालयों में पुस्तकों की वृद्धि (वर्षवार-संचयी)

पुस्तकें

(क) केंद्रीय पुस्तकालय

तालिका 9(क) : केंद्रीय पुस्तकालय में पुस्तकों की वृद्धि

क्र.सं.	भाषाओं के आधार पर पुस्तकों का वर्गीकरण	पुस्तकों की संख्या		31.3.1993 तक कुल संख्या
		31.3.1993 तक	वर्ष 1992–93 के दौरान जोड़ी गई	
1.	अंग्रेज़ी पुस्तकें	29,101	1,873	30,974
2.	हिंदी पुस्तकें	4,290	327	4,617
3.	अन्य पुस्तकें	2,771	2,281	5,592
	कुल	36,162	5,021	41,183

(ख) क्षेत्रीय और अध्ययन केंद्रों में पुस्तकालय

वर्ष 1992–93 के दौरान, 16 क्षेत्रीय केंद्रों तथा 219 अध्ययन केंद्रों के पुस्तकालयों को 19,048 पुस्तकों की आपूर्ति की गई । क्षेत्रीय और अध्ययन केंद्रों में पुस्तकों की कुल संख्या निम्न प्रकार थी :

तालिका 9(ख) : क्षेत्रीय केंद्रों तथा अध्ययन केंद्रों के पुस्तकालय में पुस्तकों की वृद्धि

1. 31.3.1992 तक पुस्तकों की संख्या	1,35,917
2. वर्ष 1992–93 के दौरान भेजी गई पुस्तकों की संख्या	19,048
3. 31.3.1993 तक सप्लाई की गई पुस्तकों की कुल संख्या	1,54,965

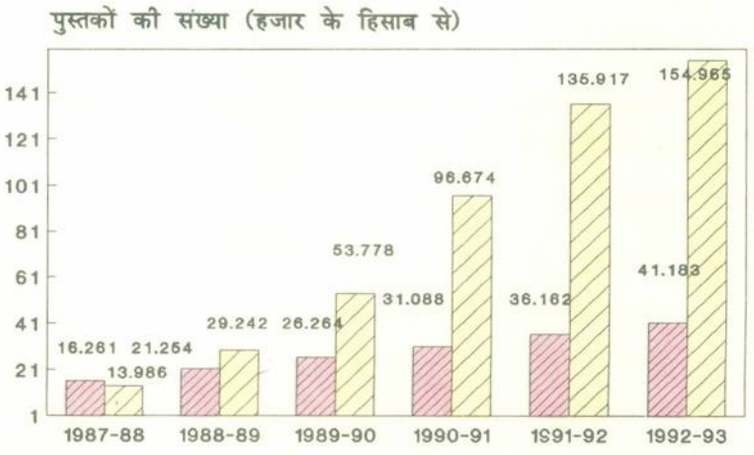

चित्र 10 : पुस्तकालयों में पुस्तकों की कुल संख्या (वर्षवार–संचयी)

पत्र-पत्रिकाएँ

विभिन्न विद्यापीठों से नई पत्रिकाएँ लेने की बढ़ती हुई माँग, पत्र-पत्रिकाओं की कीमतों में निरंतर वृद्धि, और बजट में प्रति वर्ष कमी होने के कारण पुस्तकालय ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ लेने की समीक्षा की। निम्नलिखित किसी एक कारण अथवा अधिक कारणों की वजह से 147 पत्र-पत्रिकाओं को अपनी सूची से हटा लिया गया है :

- प्रकाशन बंद हो जाने के कारण
- अनियमित प्रकाशन होने के कारण
- जिन्हें हटाने की सिफारिश संकाय सदस्यों ने की थी; और
- जिनकी आपूर्ति एजेंट नहीं कर सके।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय पुस्तकालय, दिल्ली पुस्तकालय नेटवर्क (डी.ई.एल.एनई.टी.) का सदस्य पुस्तकालय है। इसलिए यह संभव हुआ है कि नेटवर्क के अन्य सदस्य पुस्तकालयों से संसाधनों के बंटवारे से पत्र-पत्रिकाओं की कीमत तर्कसंगत की गई और अंतर-पुस्तकालय ऋण के अंतर्गत उन्हें उधार लिया गया। वर्ष 1992-93 के दौरान उतनी ही संख्या में पत्र-पत्रिकाएँ ली जा रही थीं, जितनी संख्या में वर्ष 1991-92 के दौरान ली जाता थीं। ये हैं :

(क) वर्ष 1992-93 में ली गई विषय से संबंधित पत्र-पत्रिकाएँ

अंग्रेज़ी	410
हिंदी	15

(ख) वर्ष 1992-93 में ली गई मैगज़ीन

अंग्रेज़ी	22
हिंदी	16

पुस्तकालय, सोलह क्षेत्रीय केंद्रों के लिए छह दूर शिक्षा जर्नल ले रहा है।

पुस्तकालय सेवाएँ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय पुस्तकालय, पाठकों और अन्य विद्वानों को विभिन्न सेवाएँ उपलब्ध कराता है। ये सेवाएँ हैं :

- वाचनालय
- परिदाय
- अंतर-पुस्तकालय उधार सेवाएँ
- संदर्भ
- सूचना सेवा
- प्रलेखन
- ग्रंथ वृत्तात्मक सहायता
- रिप्रोग्राफिक सहायता

- लैमिनेशन
- स्पाइरल जिल्दबंदी

पुस्तकालय संचालन का कंप्यूटरीकरण

पुस्तकालय ने, केंद्रीय पुस्तकालय और क्षेत्रीय तथा अध्ययन केंद्रों के लिए पुस्तकें लेने के लिए दो अलग डाटा-बेस तैयार किए हैं । इसने पुस्तकालयों द्वारा खरीदी जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं का डाटा-बेस भी तैयार किया है । प्रत्येक केंद्र में चल रहे कार्यक्रमों सहित सभी क्षेत्रीय तथा अध्ययन केंद्रों के पतों की अद्यतन निदेशिका भी बनाई गई ।

पुस्तकालय में सी.डी.-आर.ओ.एम. (CD-ROM) सुविधाएँ उपलब्ध हैं और यह विभिन्न डाटा-बेसों से ग्रंथ वृत्तात्मक सेवाएँ तथा सूचना सेवाएँ भी प्रदान करता है । उदाहरण के लिए, डिस्टेंस एज्युकेशन बुक्स इन प्रिंट (अमेरिका), व्हाइटकर बुक बैंक (इंगलैंड), ई.आर.आई.सी. और एल.आई.एस.ए. । दूर शिक्षा से संबंधित सी.डी-आर.ओ.एम. डाटा बेस की आपूर्ति, अंतरराष्ट्रीय दूर शिक्षण केंद्र, मिल्टन, कीन्स, इंगलैंड ने की । इसमें दूर शिक्षण संस्थाओं, उनके द्वारा चलाए जा रहे पाठ्यक्रमों तथा दूर शिक्षा से संबंधित साहित्य की जानकारी भी शामिल है । इस समय, देश में इ.गां.रा.मु.वि. पुस्तकालय ही एकमात्र ऐसा पुस्तकालय है जो अन्य विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं सहित उपर्युक्त सी.डी-आर.ओ.एम. डाटा बेस का इस्तेमाल करने वाले सभी लोगों को दूर शिक्षा से संबंधित सूचनाएँ उपलब्ध करा रहा है ।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय पुस्तकालय की गणना उन कुछ पुस्तकालयों में की जाती हैं जिन्हें डी.ई.एल.एन.ई.टी. (दिल्ली पुस्तकालय नेटवर्क) तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा प्रायोजित आई.एन.एल.आई.बी.एन.ई.टी. (सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क) में भाग लेने दिया जाता है तथा सहभागी पुस्तकालय में नेटवर्क स्थापित करने और संसाधन सुविधाओं का आपस में लाभ उठाने के लिए दिसंबर, 1992 में राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी सुचना पद्धति (National Information System of Science and Technology-NISSAT) नई दिल्ली द्वारा इलैक्ट्रॉनिक उपकरण (इलैक्ट्रॉनिक मोडम) लगाया गया ।

इ.गां.रा.मु.वि. - ओ.डी.ए. परियोजना के तहत प्राप्त पुस्तकें

इ.गा.रा.मु.वि.-ओ.डी.ए. परियोजना में 1,35,000 पाउंड की राशि पुस्तकालय के लिए पुस्तकें तथा सॉफ्टवेयर के अधिग्रहण के लिए निर्धारित की गई है । पुस्तकालय में ओ.डी.ए. ग्रांट से 2783 पुस्तकें प्राप्त हुई, जिनका विवरण तालिका 10 में है ।

तालिका 10 : ओ.डी.ए. सहायता के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकें

1991-92	640 पुस्तकें
1992-93	2,143 पुस्तकें
जोड़	2,783 पुस्तकें

प्रकाशन

पुस्तकालय तथा प्रलेखन प्रभाग ने इं.गां.रा.मु.वि. के पाठ्यक्रमों की सूची का प्रथम संस्करण जनवरी, 1992 में संकलित कर लिया था। इसमें प्रत्येक कार्यक्रम का परिचय ब्यौरेवार दिया गया है। इन ब्यौरों में कार्यक्रम का विस्तार क्षेत्र, लक्षित छात्र वर्ग, पाठ्यक्रम संरचना, शिक्षण का माध्यम, अपेक्षित अर्हता, आयु, अवधि, शुल्क आदि शामिल हैं। इसमें विश्वविद्यालय की तैयार की गई समस्त मुद्रित सामग्री तथा ऑडियो-वीडियो कार्यक्रमों संबंधी सूचना दी गई है।

8. छात्र सहायता सेवाएं

8.1 क्षेत्रीय सेवा प्रभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने अपने क्षेत्रीय केंद्रों का गठन विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री का लाभप्रद ढंग से उपयोग करने में सहायता देने और नियमित संपर्क चैनलों के माध्यम से शैक्षिक, प्रशासनिक और सूचना सहायता देने के उद्देश्य से की है ताकि विद्यार्थियों में शिक्षा-जगत से अलगाव की संभावित भावना उत्पन्न न हो।

तालिका 11 : क्षेत्रीय केंद्र नेटवर्क

क्र. सं.	क्षेत्रीय केंद्र	संचालन क्षेत्र	अध्ययन केंद्रों की संख्या
1.	अहमदाबाद	गुजरात, दमन, दीव और दादरा नगर हवेली	14
2.	बंगलौर	कर्नाटक और गोआ	11
3.	भोपाल	मध्य प्रदेश	15
4.	भुवनेश्वर	उड़ीसा	13
5.	कलकत्ता	पश्चिम बंगाल और सिक्किम	13
6.	कोचीन	केरल और लक्षद्वीप	13
7.	दिल्ली	दिल्ली	18
8.	हैदराबाद	आंध्र प्रदेश	10
9.	जयपुर	राजस्थान	11
10.	लखनऊ	उत्तर प्रदेश	24
11.	मद्रास	तमिलनाडु, पाण्डिचेरी, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	15
12.	शिलांग	असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, त्रिपुरा, और मणिपुर	15
13.	शिमला	हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर	10
14.	पुणे	महाराष्ट्र	13
15.	करनाल	हरियाणा, पंजाब और चंडीगढ़	14
16.	पटना	बिहार	10

Total 16 77

विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने सहायता सेवाओं के परिचालन के लिए विकेंद्रिकृत तीन-स्तरीय संरचना — मुख्यालय, क्षेत्रीय केंद्र; और अध्ययन केद्र — अपनाई है। राष्ट्रीय स्तर पर सहायता सेवाओं के नेटवर्क की स्थापना और अनुरक्षण का दायित्व मुख्यालय में क्षेत्रीय सेवा प्रभाग का है। यह प्रभाग अपने नेटवर्क के व्यवस्थापन में विश्वविद्यालय की अध्ययन विद्यापीठों के विकटतम सहयोग और राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा की अन्य संस्थाओं के सहयोग से भी कार्य करता है।

क्षेत्र-विशेष के अंतर्गत अध्ययन केंद्रों के नेटवर्क के विस्तार, अनुरक्षण, समन्वय और देख-रेख (मानीटरिंग) के लिए क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किए गए हैं। क्षेत्रीय केंद्र, विश्वविद्यालय के नियमित कार्यालय हैं। उनमें पूर्णकालिक शैक्षिक एवं प्रशासनिक कर्मचारी हैं और साथ ही ये केंद्र कंप्यूटर रिप्रोग्राफिक सुविधाओं, टेलीफोन, टेलेक्स और फैक्स सुविधाओं से सुसज्जित हैं। विश्वविद्यालय के सभी कार्यक्रमों में प्रवेश, क्षेत्रीय केंद्रों के माध्यम से किया जाता है। उन्हें विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों, संचालकों ओर शैक्षिक परामर्शदाताओं के अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करने, अध्ययन केंद्रों में विभिन्न शैक्षिक कार्यकलाप के संचालन की देख-रेख करने के बारे में सूचना देने आदि की जिम्मेदारी सौंपी गई है। 1992-93 के दौरान चार क्षेत्रीय केंद्रों — दिल्ली, करनाल, शिमला और अहमदाबाद — ने अध्ययन केंद्रों के माध्यम से सामग्री सफलतापूर्वक वितरित की।

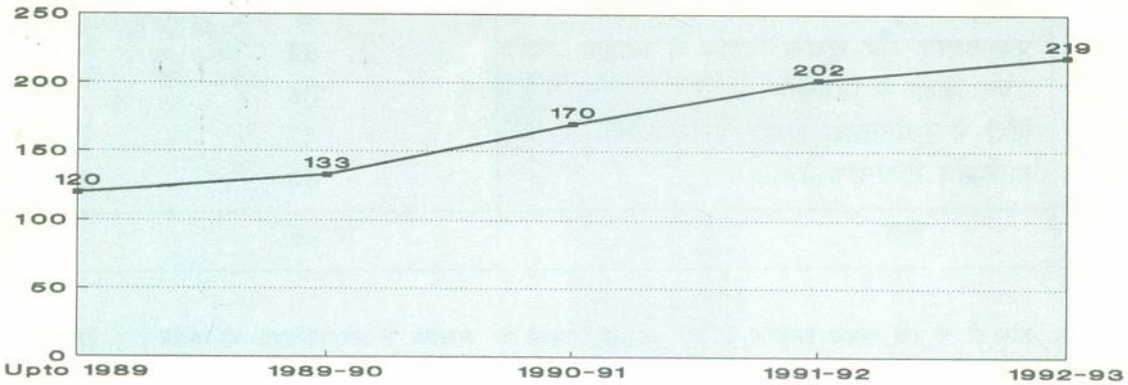

चित्र 11 : अध्ययन केंद्रों का विकास (वर्षवार-संचयी)

विश्वविद्यालय के अध्ययन केंद्र, विश्वविद्यालय और उसके विद्यार्थियों के बीच संपर्क का मुख्य बिंदु हैं। ये केंद्र आतिथेय संस्थानों द्वारा निःशुल्क दिए गए भवनों में स्थित हैं और इसमें संचालक, सहायक संचालक, सहायक स्टाफ तथा शैक्षिक परामर्शदाताओं सहित अंशकालिक स्टाफ नियुक्त है। सभी अध्ययन केंद्रों में मानकीकृत फर्नीचर, दृश्य-श्रव्य उपकरण (टी.वी.वी.सी.आर. और टू-इन-वन) पाठ्यक्रम सामग्री, संदर्भ पुस्तकें और विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित द्रश्य-श्रव्य कैसेटों से युक्त पुस्तकालय हैं। अध्ययन केंद्रों में सूचना और मार्गदर्शन, परामर्श और अनुशिक्षण, द्रश्य-श्रव्य सुविधाएँ पुस्तकालय सेवाएँ, सत्रीय कार्य प्राप्त करना और उनका मूल्यांकन, तथा सत्रांत परीक्षाएँ अयोजित कराने की सुविधाएँ दी जाती हैं। अध्ययन केंद्र रविवार और अवकाश के दिन तथा कार्य-दिवसों में शाम को काम करते हैं। अध्ययन केंद्र संभावित नामांकन, सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में भौगोलिक वितरण, पिछड़े तथा दूर-दराज के क्षेत्रों की विशेष अवश्यकताओं, आवश्यक आधारिक संरचना तथा परामर्श के लिए शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता आदि के आधार पर खोले जाते हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों के वितरण में और संगठनों में सम्मिलित करने की दृष्टि से मान्यता-प्राप्त अध्ययन केंद्र स्थापित किए गए हैं । ये केंद्र आवर्ती और अनावर्ती व्यय स्वयं वहन करते हैं । इन केंद्रों पर विश्वविद्यालय का केवल शैक्षिक नियंत्रण रहता है । कार्यक्रमों की विविधता और उनके विस्तार, विशिष्ट क्षेत्र तथा विशिष्ट कार्यक्रम में भी वृद्धि को देखते हुए ये उप-केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं ।

तालिका 12 : अनुमोदित शैक्षिक परामर्शदाता* (31.3.1993 तक)

क्र. सं.	कार्यक्रम	परामर्शदाताओं की संख्या*
1.	स्नातक उपाधि कार्यक्रम	6136
2.	प्रबंध कार्यक्रम	1678
3.	ग्राम विकास में डिप्लोमा	807
4.	भोजन और पोषण में प्रमाण-पत्र	666
5.	बी.एस.एल.सी.	256
6.	कार्यालय प्रबंध में कंप्यूटर में डिप्लोमा	120
7.	दूर शिक्षा में डिप्लोमा	84
8.	अग्रेज़ी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा	80
9.	पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में स्नातक उपाधि	90
10.	उच्च शिक्षा में डिप्लोमा	116
11.	हिंदी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा	52
12.	मार्गदर्शन में प्रमाण-पत्र	63
	कुल	10148

* दिए गए आँकड़ों में इस समय कार्यरत शैक्षिक परामर्शदाताओं के अलावा वे परामर्शदाता भी शामिल हैं जिनका नाम अनुमोदित है तथा जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर कार्य सौंपा जाएगा । कुछ मामलों में किसी एक ही व्यक्ति का नाम विभिन्न कार्यक्रम में परामर्श के लिए अथवा एक ही कार्यक्रमों के विभिन्न पाठ्यक्रमों में परामर्श के लिए दर्ज हो सकता है ।

वर्ष 1992-93 के दौरान एक मान्यता-प्राप्त अध्ययन केंद्र सहित 18 नए अध्ययन केंद्र स्थापित किए गए । इसके अलावा, अध्ययन केंद्रों से संबद्ध 4 उप-केंद्र भी स्थापित किए गए । इन उप-केंद्रों में से विश्वविद्यालय में नामांकित कैदियों के लाभ के लिए बंगलौर केंद्रीय कारागार में खोला गया एक उप-केंद्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है । वर्ष के अंत तक, विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय सेवा नेटवर्क में 16 क्षेत्रीय केंद्र और 219 अध्ययन केंद्र थे (चित्र 10) । इन अध्ययन केंद्रों में लगभग 500 संचालकों तथा सहायक संचालकों और लगभग 10,000 शैक्षिक परामर्शदाताओं की सेवाएँ ली जाती हैं ।

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, क्षेत्रीय सेवा प्रभाग ने अपने स्टाफ विकास कार्यकलाप के अंग के रूप में क्षेत्रीय केंद्रों में शैक्षिक परामर्शदाताओं के लिए 47 अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए, जिनमें से 772 नव-नियुक्त शैक्षिक परामर्शदाताओं को दूर शिक्षा पद्धति में अभिविन्यास दिया गया । वर्ष के अंत